Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 32 • 12 मई - 18 मई, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 10-05-2025 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

उपदेश

जे अणांचारी थका आचार बतावें,
ते यूंही अन्हाखी कूकें।
जांणें गायां तणां टोलारे मांहिं,
निकेवल गधा ज्यूं भूके।।

जो स्वयं आचारहीन है और दूसरों को आचार का उपदेश देता है वह व्यर्थ ही बकवास कर रहा है। ऐसा लगता है मानो गौओं के टोले में गधा रेंक रहा है।

– आचार्यश्री भिक्षु

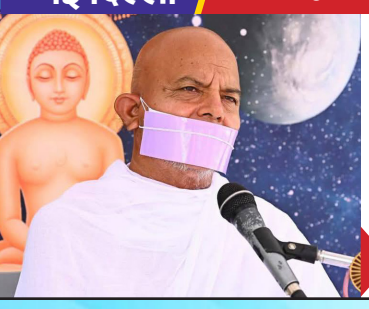

ऋजुता नहीं है तो शुद्धि के आगे है प्रश्नचिह्न : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

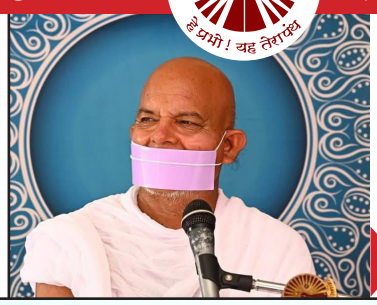

लोभ को संतोष से परास्त करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

Address Here

आत्मा के कल्याण के लिए मानव जीवन जीने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

64वें जन्मोत्सव पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, गुजरात के राज्यपाल सहित हज़ारों श्रद्धालु हुए उपस्थित

पालनपुर।
6 मई, 2025

संयम और साधना के प्रतीक, अहिंसा यात्रा के यशस्वी पथिक तथा अणुव्रत आंदोलन के वर्तमान नेतृत्वकर्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का 64वां जन्म दिवस पालनपुर में अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और समर्पण के वातावरण में मनाया गया।

63 वर्ष पूर्व सरदारशहर के दुगड़ परिवार में माता नेमा की पुण्य कुक्षि से बालक 'मोहन' के रूप में जन्मे। तेजस्वी बालक आगे चलकर मुनि सुमेरमल जी से दीक्षा लेकर 'मुनि मुदित' बन गए। पूज्य गुरुदेव तुलसी की दूरदृष्टि ने उन्हें महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित किया, और पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने उन्हें युवाचार्य घोषित किया। आज वे सम्पूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ के अधिपति हैं — जन-जन के मनमोहन - ज्योतिचरण श्री महाश्रमण।

परम पावन आचार्य प्रवर के 64 वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर गुजरात के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रतजी विशेष रूप से उपस्थित हुए।

भाग्य और पुरुषार्थ की हो संतुलित साधना

अपने जन्मोत्सव पर पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फ़रमाया — एक प्रश्न हो सकता है कि जीवन क्यों जिएं? प्राचीन साहित्य में 84 लाख जीव योनियां बताई गई हैं, उनमें यह मानव जीवन जो हमें प्राप्त है वह दुर्लभ है। मानव जीवन मिल गया है तो यह विशेष चीज़ मिल गई। जन्म-मरण से, अत्यंत दुःख से मुक्ति इस मानव जीवन से ही हो सकती है। जन्म होना एक सामान्य घटना है। जन्म तो हर प्राणी लेता है। विशेष बात यह है कि जन्म लेने के बाद आदमी जीवन में सत्पुरुषार्थ क्या करता है? अच्छा पुरुषार्थ करने वाला अच्छे फल को प्राप्त कर सकता है। इच्छित फल न मिलने से निराशा भी हो सकती है। दो अवधारणाएं हैं — भाग्यवाद और पुरुषार्थवाद। मैं भाग्यवाद को भी मानता हूं। कर्मवाद भाग्यवाद से जुड़ा है। कर्तव्य पुरुषार्थ है। भाग्यवाद को जान लें, पर भाग्य को भी अच्छा बनाना है तो पुरुषार्थ करना होगा। प्रयत्न करने पर भी सिद्धि, सफलता न मिले तो इसमें कोई दोष नहीं है। दुबारा पुरुषार्थ करो, सफलता मिल भी जाए। कोई पुरुषार्थ ऐसा नहीं होता जिसका कोई फल नहीं होता है। देर भले हो जाए, अंधेर नहीं है।

मानव जीवन में भी यदि कोई संन्यास को प्राप्त कर लेता है तो बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। संन्यास की तुलना में दूसरी भौतिक संपदा नहीं आ सकती। जिसने शुद्ध संन्यास पाल लिया, वह धन्य हो जाता है। त्याग के समान सुख नहीं, और राग के समान दुख नहीं। जो त्याग के मार्ग पर चलता है, वह महानता के मार्ग पर अग्रसर होता है। जीवन क्यों जीएं, इसका समाधान शास्त्र के माध्यम से दिया गया कि मानव जीवन में धर्म के मार्ग पर चलते हुए मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। आत्मा के कल्याण के लिए मानव जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर ने संन्यास को जीवन का सर्वोच्च पुरुषार्थ बताते हुए कहा कि आज वैशाख शुक्ल नवमी है। मैं जन्म दिवस को ज्यादा महत्त्व नहीं देता। संन्यास लेना महत्त्व की बात है।

आप भी संन्यास ले लेना

राज्यपाल महोदय की उपस्थिति पर पूज्यप्रवर ने कहा — आज महामहिम राज्यपाल महोदय का आगमन होना महत्वपूर्ण है। आपका पांच बार पदार्पण होना बड़ी बात है। मुझे याद नहीं कि कोई एक राज्यपाल यहां पांच बार आए हों। आपके भाषण मुझे अच्छे लगते हैं। आपका भाषण संन्यासी का-सा भाषण लगता है। कभी मौका आए तो आप भी संन्यास ले लेना।

पूज्यवर ने आगे कहा - दुगड़ परिवार भी आया है, सुजानमलजी नहीं आ पाए। पूरे परिवार में धार्मिकता के अच्छे संस्कार बने रहें। मुझमें भी धार्मिक-आध्यात्मिकता साधना का विकास होता रहे।

राज्यपाल महोदय ने पूज्यवर की कृति 'तीन बातें ज्ञान की' के अंग्रेज़ी संस्करण 'Three Aspects of Wisdom' को पुज्यप्रवर को अर्पित कर पुस्तक का लोकार्पण किया। यह पुस्तक जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रकाशित की गई है।

राज्यपाल महोदय ने अपनी भावपूर्ण कविता में संन्यास को यूँ परिभाषित किया —

'है संन्यास क्या — ग़म में औरों के गलना,
पड़ी चिता में औरों के जलना,
खंजर की धारा पर पग धरकर चलना,
न हरगिज़ हिचकना, न हरगिज़ मचलना।
इधर तोड़ना बंधन सब खानुमां के,
इधर बाप बन जाना सारे जहां के।
किया संन्यास का रुतबा आला,
तपस्वी महाश्रमण जी, तेरा बोलबाला।"

उन्होंने आगे कहा, 'जन्म-जन्मांतर का संयोग होता है, तब मुझे आपके कार्यक्रम में पांचवीं बार आने अवसर मिला है। आपके विचार, आपका जीवन दर्शन, प्राणी मात्र के प्रति करुणा और दया का भाव — सही अर्थों में बहुत बड़ी प्रेरणा है।

पूज्य आचार्य महाश्रमण जी ने संन्यास धर्म का पालन करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन प्राणीमात्र की भलाई के लिए समर्पित किया है। आपके प्रवचनों में युवा पीढ़ी को नशामुक्त बनाना, जीवन चरित्र ऊंचा करना, सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना — ये प्रेरणाएं मिलती हैं। आचार्यजी का चिंतन एक बहुत बड़ा मार्गदर्शन है। आप महातपस्वी और संयमी हैं और शास्त्रों के साथ जुड़कर हमारी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना करने में आपका बहुत बड़ा योगदान रहता है। ऐसे महापुरुष का जन्मदिन हम सबके के लिए एक प्रेरणा है। मैं पूज्यश्री के जन्मदिन पर मंगलकामना करता हूं कि आप शतायु हों, मानवता का कल्याण करते रहें। आपका सान्निध्य हम सभी को प्राप्त होता रहे।

(शेष पेज 12 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

क्षमा और शांति में नहीं रखें दुराग्रह : आचार्यश्री महाश्रमण

डीसा।
2 मई, 2025

चार दिवसीय डीसा प्रवास का अंतिम दिन का प्रवास। जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रातः तेरापंथ सभा भवन डीसा में पदार्पण किया। वहां कुछ समय विराजना भी हुआ। अक्षय समवसरण में युगप्रधान आचार्यश्री ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में क्षमा का बहुत महत्व है। क्षमा एक धर्म है। जैन शासन में तो भगवती संवत्सरी का समारोह क्षमा का पर्व होता है। क्षमा का अर्थ है - सहन करना।

क्षमा मांग लेना और क्षमा कर देना उदारता की स्थिति हो सकती है। शक्तिशाली होने पर भी क्षमा कर देना या क्षमा का भाव रखना बड़ी बात है। 'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।' जहां शुद्ध अध्यात्म की बात है, वहां ईंट का जवाब ईंट से नहीं, ईंट का जवाब अचित्त फूलों से दें। जैसे को तैसा न हो।

चण्डकौशिक ने भगवान महावीर को डसा पर भगवान ने उसको क्षमा कर उसे ज्ञान दिया। चण्डकौशिक को ज्ञान हुआ और वह धर्म साधना में लग गया। अध्यात्म की नीति कुछ अलग और ऊंची हो सकती है। अध्यात्म का मार्ग अलग है, संसार का मार्ग अलग हो सकता है। साधु को कोई चोट भी पहुंचा दे पर साधु उसकी कहीं शिकायत नहीं करते। साधु तो क्षमामूर्ति होते हैं। जिसके पास क्षमारूपी खड्ग है, उसका दुर्जन क्या करेगा। जहां सूखी घासपूस है, वहां आग लग सकती है। खाली मैदान में आग की चिनगारी क्या कर सकेगी।

शास्त्र में कहा गया है कि वचन का प्रहार सामने से आता है, कान में शब्द पड़ते हैं, दौर्मनस्य पैदा करने वाले होते हैं। पर आदमी सोचे क्षमा मेरा धर्म है, गाली देने से गुमड़े नहीं होते। हमारे जीवन में शांति रहे। अगर अहिंसा और शांति से काम हो जाए तो हिंसा, अशांति क्यों करें।

शस्त्र को हाथ में न लेना पड़े, शास्त्रों को हाथ में लें। न्याय-नीति से सलटारा करा देवें। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अब्दुल कलाम को शांति की मिसाइल बनाने की बात बताई थी। परिवार में भी व्यर्थ विवाद न करें। क्षमा, शांति, न्याय-नीति में दुराग्रह नहीं रखना चाहिए। अणुव्रत के द्वारा गुरुदेव तुलसी ने नैतिकता-अहिंसा का संदेश दिया था। आचार्य भिक्षु जो हमारे आद्य प्रवर्तक थे, वे किस तरह विवाद को शांति से समाप्त कर देते थे। निष्पक्ष होकर बात बताने का प्रयास करें। समझाने के अनेक तरीके हो सकते हैं।

दो देशों के बीच भी अहिंसा से सलटारा हो जाए। अध्यात्म के क्षेत्र में तो प्रतिकार की बात ही नहीं है। शांति से सलटारा हो जाए, इससे बड़ी क्या बात हो सकती है। हम जीवन में क्षमा को अपनाएं।

साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गलती न करने वाले मनुष्य और गलती न करने वाली मशीन में किसको चुनना चाहिए। मनुष्य मशीन बना सकता है। मशीन मनुष्य नहीं बना सकती। हमें मनुष्य जन्म मिला है। इसकी मूल्यवत्ता बनाए रखने का एक साधन है - शरीर। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तीन शरीर बताए हैं - स्थूल शरीर, यशः शरीर और धर्म शरीर। यशः शरीर मरने पर भी जीवित रहता है।

धर्म शरीर हमारा पुष्ट है तो हमारा औदारिक और यशः शरीर भी पुष्ट रहेगा। इसलिए हमें धर्म शरीर का पोषण करना है। हमें कषायों को मंद कर धर्म को अपनाना है।

पूज्यवर के स्वागत में उपासक रतनलाल मेहता, महाराणा प्रताप स्कूल से हर्षद भाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों द्वारा चौबीसी के गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। संगीता बोरदिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मूर्च्छा और मोह से दूर रहने की साधना है अध्यात्म : आचार्यश्री महाश्रमण

डीसा।
1 मई, 2025

समता के सागर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने डीसा के अक्षय समवसरण में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि यह शरीर जो दिखाई दे रहा है, वह पौद्गलिक ही है या कुछ और है? इस विषय में शरीर और आत्मा पर ध्यान देना जरूरी है। एक पुरानी नास्तिक परंपरा रही है - तद् जीव तद् शरीर, यानी शरीर और आत्मा एक ही हैं, अलग-अलग नहीं हैं।

एक विचारधारा आस्तिकवाद की भी रही है - अन्य जीव, अन्य शरीर। अध्यात्म का ढांचा तभी सुरक्षित रह सकता है जब अन्य जीव, अन्य शरीर का सिद्धांत हो। नास्तिकवाद के अनुसार तो वर्तमान जीवन ही सब कुछ है। आगे कुछ नहीं है।

शरीर समाप्त तो आत्मा भी नहीं। उनके अनुसार तो धर्म की अपेक्षा नहीं है। सिर्फ खाओ, पीओ और मौज करो। यह सिद्धांत भौतिकता को पुष्ट करने वाला है। यह अध्यात्म और धर्म से विपरीत विचारधारा है।

पर यथार्थ क्या है? अन्य जीव, अन्य शरीर - यह अध्यात्मवाद की बात है। आत्मा अलग तत्व है, शरीर अलग तत्व है। मृत्यु के बाद शरीर का नाश हो जाता है पर आत्मा का नाश नहीं होता। आत्मा तो अनंतकाल पहले थी, वर्तमान में है और अनंतकाल तक रहेगी। आस्तिकवाद विचारधारा में आत्मा को शाश्वत माना गया है।

हम विचार करें तो आत्मा और शरीर अलग-अलग होने चाहिए। हम देखें कि एक आदमी हर प्रकार से सुखी है, तो एक हर प्रकार से दुःखी भी है। यह अंतर पूर्वकृत कर्मों का फल है। पूर्वजन्म की स्मृतियां यह बताती हैं कि आत्मा का अस्तित्व पहले भी था। बौद्धिकता के आधार पर कुछ निर्णय किया जा सकता है कि आत्मा है, आत्मा सुख-दुःख की कर्ता है। जैन धर्म के शास्त्रों में ही नहीं, अन्य धर्म के ग्रंथों में भी यह बातें

मिलती है।

शरीर पुद्गल है, इसके प्रति व अन्य पुद्गल पदार्थों के प्रति ममत्व नहीं करना चाहिए। ये चीजें साथ में नहीं जातीं। अध्यात्म की साधना मूर्च्छा और मोह से दूर रहने की साधना है। मैं आत्मा हूं, मुझे शुद्ध बनना है। मैं आत्मा के लिए क्या कर रहा हूं, यह चिंतन करें। आत्मा के कल्याण के लिए धर्म और अध्यात्म साधना करनी चाहिए। दो प्रकार के धर्म बताए गए हैं - समयबद्ध धर्म और समयातीत धर्म। ईमानदारी-नैतिकता समयातीत धर्म की साधना है।

जहां भी कार्य करें, व्यापार-धंधा कुछ भी करें, वहां ईमानदारी रखने का प्रयास करना चाहिए। जहां तक संभव हो सके, झूठ और चोरी से बचने का प्रयास करना चाहिए। जितना संभव हो सके, धार्मिक कार्यों के लिए समय निकालने का प्रयास करना चाहिए। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के रूप में ऐसा विधान दिया है कि जहां धर्म को अपने व्यवहार के साथ ही जोड़ लिया जाए तो उसके अलग से समय भी लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। हमारे जीवन में अध्यात्म की साधना चले। हम अच्छा काम करें।

पूज्यवर की अभिवंदना में प्राची मेहता ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। डीसा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपने आराध्य के समक्ष अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। अनिल मेहता ने गीत का संगान किया। 'बेटी तेरापंथ की' आयाम से जुड़ी डीसा की बेटियों ने भी आचार्यश्री के समक्ष अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

7 दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का भव्य समापन

बेंगलूरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलूरु- गांधीनगर द्वारा आयोजित 7 दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का समापन तेरापंथ भवन, गांधीनगर में एक भव्य दीक्षांत समारोह के साथ हुआ। कार्यशाला का उद्देश्य युवाओं में आत्मविश्वास भरना, प्रभावी मंच संचालन की कला सिखाना तथा स्पष्ट, संस्कारित एवं प्रभावशाली वक्ता तैयार करना रहा।

साध्वी पावनप्रभा जी एवं साध्वी पुण्ययशा जी ने उपस्थितजनों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा, 'किसी भी कार्य को करने से पहले गुरु की आराधना करना आवश्यक है जो हमें संयमित, संस्कारित एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन की दिशा दिखाते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने की। मुख्य अतिथि दिनेश पोखरणा ने वक्तृत्व कला को जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी बताते हुए अपने विचार रखे।

मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत ने कार्यशाला के सभी प्रतिभागियों को व्यावहारिक कुशल प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षक विनीत सिंघवी, मोनिका गांधी व लता नवलखा ने 7 वंडर्स, मॉक ड्रिल, रोल-मॉडल एवं अनेक प्रकार के भाषण अभ्यास के माध्यम से प्रतिभागियों को मंच पर बोलने का प्रशिक्षण प्रदान किया।

समारोह में सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, सीपीएस सलाहकार सतीश पोरवाड़, शाखा प्रभारी अमित दक एवं अन्य गणमान्य जनों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने अपने उद्बोधन से प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं विशेष उपहार प्रदान किए गए। मंत्री राकेश चोरड़िया ने सभी सहभागियों, प्रशिक्षकों, प्रायोजकों एवं सेवा में तत्पर युवाओं का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में मुख्य प्रायोजक के रूप में लादुराम ताराचंद मुन्नीचंद धारीवाल - छोटी खाटू एवं सह-प्रायोजक के नवरत्नमल विनोदकुमार आदर्श गादिया - कंटालिया का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का कुशल संयोजन साहिल कोठारी एवं सह संयोजन आदित्य सेठिया ने किया।

वृहद् भक्तामर प्रकल्प अनुष्ठान भव्य आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में वृहत्तर कोलकाता में भक्तामर प्रकल्प अनुष्ठान के 100 वें सप्ताह में प्रवेश करने पर वृहद् भक्तामर प्रकल्प अनुष्ठान एवं समारोह का भव्य आयोजन उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ सभागार में आयोजित किया गया। वृहत्तर कोलकाता के विभिन्न सभा क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

समारोह से पूर्व चरण में मुनिश्री द्वारा भक्तामर प्रकल्प अनुष्ठान करवाया गया। अनुष्ठान के पश्चात आयोजित समारोह में धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा – "भक्तामर स्तोत्र आचार्य मानतुंग की अनमोल कृति है।

इसकी रचना सातवीं शताब्दी में हुई। यह एक चमत्कारिक भक्ति काव्य स्तोत्र है। इसमें भगवान ऋषभ की स्तुति की गई है। हजारों-हजारों जैन अनुयायी प्रतिदिन इसका पाठ करते हैं। इसमें मंत्राक्षरों की संयोजना की गई है। इसके जाप से रोग, शोक, दुःख, पीड़ा, विघ्न दूर हो जाते हैं। उत्तरवर्ती आचार्यों ने भक्तामर स्तोत्र पर कई कल्प तैयार किये हैं। भक्तामर का पाठ एवं जाप करने से अनेक भौतिक एवं आध्यामिक लाभ होते हैं।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा- भक्तामर पाठ से नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार होता है। कार्यक्रम का शुभारंभ बाल मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण सभा के सहमंत्री डॉ. अरिहंत सिंघी ने दिया।

भक्तामर प्रकल्प अनुष्ठान ग्रुप उत्तर हावड़ा ने सुमधुर गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन संयोजक विकास श्यामसुखा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

एस्पायर आर्क : नए नेतृत्व की दिशा

सूरत।

तेरापंथ किशोर मंडल सूरत द्वारा एस्पायर आर्क का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

यह आयोजन तेरापंथ किशोर मंडल-एक्सिस की ओर से युवा नेतृत्व को दिशा देने एवं व्यक्तिगत विकास के माध्यम से संघ सेवा की भावना को जागृत करने हेतु एक सार्थक प्रयास था।

कार्यक्रम में तेरापंथ किशोर मंडल एक्सिस के ब्लू ब्रिगेड मेंबर पुलकित कोठारी एवं एग्जीक्यूटिव ब्लू ब्रिगेड मेंबर भव्य बोथरा ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से किशोरों में नव ऊर्जा का संचार किया।

उन्होंने अपने अनुभवों के माध्यम से बताया कि तेरापंथ किशोर मंडल के मंच का उपयोग करते हुए एक किशोर न केवल अपने व्यक्तिगत विकास की दिशा में अग्रसर हो सकता है, बल्कि संघ के प्रति अपने कर्तव्यों को समझकर उनका प्रभावी निर्वाह कर सकता है।

कार्यक्रम के अगले चरण में सभी किशोरों को पाँच-पाँच के समूहों में विभाजित कर संस्कार विषय पर दो मिनट का एक छोटा नाट्य-प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। इस सत्र का उद्देश्य था कि किशोर रचनात्मकता के साथ अपने विचारों को व्यक्त करें और टीमवर्क का अनुभव प्राप्त करें।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, सूरत के मंत्री सौरभ पटावरी ने भी कार्यक्रम की सराहना करते हुए तेरापंथ किशोर मंडल सूरत द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की ।

वर्षीतप अनुमोदन कार्यक्रम आयोजित

सुजानगढ़।

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में तपस्विनी बहन साधना रांका के वर्षीतप अनुमोदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। इसके पश्चात तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा तप अनुमोदना की गीतिका प्रस्तुत की गई। साध्वी मुकुलयशा जी द्वारा भावपूर्ण गीतिका का संगान किया गया।

'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मुक्ति के चार मार्ग बताए गए हैं — ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। इन चारों में तप का विशेष महत्व है, क्योंकि यह आत्मशुद्धि का मार्ग है। साध्वी मनीषाश्रीजी ने तपस्विनी को तप के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

तपस्विनी के सुपुत्र समर्थ रांका, ज्ञानशाला संयोजक संजय बोथरा ने अपनी भावनाएं प्रकट करते हुए तप अनुमोदना की। तपस्विनी के दादा धर्मचंद बोथरा ने स्वरचित गीत का संगान किया। तपस्विनी बहन साधना रांका ने बताया कि मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से उन्होंने वर्षीतप का संकल्प लिया और इस मार्ग पर आगे बढ़ीं।

पुखराज देवी मालू ने पांच के तप का संकल्प लेते हुए तप का अभिनंदन साहित्य भेंट कर किया। कार्यक्रम का सफल संयोजन महिला मंडल मंत्री डॉ. पूजा फूलफगर ने किया।

तपस्या का ताप बढ़े और कषाय का ताप घटे

टन्डियारपेट, चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, उत्तर चेन्नै के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, टन्डियारपेट में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में वर्षीतप तपोभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंजु दक द्वारा मंगलाचरण से हुई। सभा अध्यक्ष इन्दरचंद डूंगरवाल ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए तपस्वियों की तप अनुमोदना की।

तण्डियारपेट ट्रस्ट के ट्रस्टी पूनमचंद ने स्वागत-संवाद प्रस्तुत किया। मुनि दीप कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि व्यक्ति के जीवन में तपस्या बढ़े, लेकिन कषायों का ताप घटे। तपस्या से कर्मों की निर्जरा होती है। उन्होंने अभिग्रह सहित तपस्या के महत्व पर प्रकाश डालते हुए साध्वी पन्नाजी के अभिग्रह फलित की घटना का उल्लेख कर उसका महत्व स्पष्ट किया। उन्होंने सभी तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए मंगलकामनाएँ संप्रेषित की।

वर्षीतप तपस्वियों—शांता बाफना, सौभाग्यवती चोपड़ा, विमला देवी मांडोत, शोभा बाई खीवेसरा, एवं संगीता भरसारिया—का तपोभिनंदन-पत्र द्वारा सम्मान किया गया। तपस्वियों के परिजनों ने अपने भावों के माध्यम से तप अनुमोदना की।

स्थानीय बहनों ने गीतिका के माध्यम से तप अनुमोदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष कमलेश बाफना ने किया और धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष दिलीप गेलड़ा ने दिया। इस अवसर पर आंचलिक प्रभारी विमल चिप्पड़, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा सहित उत्तर चेन्नै के प्रभारीगण एवं श्रावक समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

प्रेक्षा ध्यान, जीवन-विज्ञान और साहित्य के महान आचार्य के 16वें महाप्रयाण दिवस पर विविध कार्यक्रम

सिलवासा

सिलवासा के तेरापंथ भवन में प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 16वीं वार्षिक पुण्यतिथि का आयोजन प्रोफेसर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में श्रद्धा, समर्पण और साधना के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा, 'आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक शक्तिशाली महापुरुष थे। उन्होंने भगवान महावीर के वचन 'णो णिण्हवेज्ज वीरियं'—अपनी शक्ति का संगोपन मत करो—को जीवन में आत्मसात किया।

पुरुषार्थ और पराक्रम के बल पर उन्होंने सफलता के शिखर को छुआ। वे प्रज्ञा के महासागर थे। असाधारण प्रतिभा लेकर टमकोर जैसे छोटे कस्बे में जन्म लेकर अपने विनय और समर्पण से विश्वविख्यात बन गए।'

उन्होंने कहा कि, 'महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित साहित्य एक विशाल वैभव है, जिसमें व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान समाहित हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वयं स्वीकार किया था कि वे महाप्रज्ञ साहित्य के प्रेमी पाठक हैं।' अपने अनुभव साझा करते हुए साध्वीश्री ने कहा, 'उनके श्रीचरणों में वर्षों तक साधना और शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना मेरे जीवन का परम सौभाग्य रहा है। तुलसी-महाप्रज्ञ काल वास्तव में तेरापंथ का स्वर्णिम काल था। उनकी प्रज्ञा रश्मियों ने अनेकों व्यक्तित्वों को निखारा।' कार्यक्रम को प्रेरणादायक बनाते हुए साध्वीश्री ने कहा, 'आज महाप्रज्ञ पुण्यतिथि पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम वचन कटुता से बचें, जो आजकल वैमनस्य की स्थिति का कारण बनती है। सुसंस्कृत भाषा का प्रयोग करें, उपशांत कषायों की साधना करें और वर्तमान में शुभ संकल्पों के साथ आगे बढ़ें।' इस अवसर पर साध्वी वृन्द ने गीत का सुमधुर संगान किया। साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी और साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने अपनी कविताओं और वक्तव्यों के माध्यम से श्रद्धा व्यक्त की। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा सिलवासा के निवर्तमान अध्यक्ष नितेश भंडारी, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा एडवोकेट मधुवाला जैन और तेरापंथ सभा वापी के अध्यक्ष झंवरलाल गुलगुलिया ने भी अपने श्रद्धासिक्त विचार प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सामूहिक संगान किया गया और रात्रिकालीन कार्यक्रम में ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने किया।

समदड़ी

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में महावीर भवन के सुरम्य प्रांगण में आचार्य महाप्रज्ञ जी का 16वाँ महाप्रयाण दिवस श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया गया। साध्वीश्री ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा, 'तेरापंथ धर्मसंघ के नीलगगन में महाप्रज्ञ के रूप में प्रज्ञा के महासूर्य का अवतरण हुआ था। उस महासूर्य की प्रत्येक किरण नवीन और तेजस्वी थी। उनके मस्तिष्क में निरंतर नवीन विचारों का स्फुरण होता रहता था। उनके अचिंतन से उत्पन्न चिन्तन ने तेरापंथ धर्मसंघ को विकास के शिखरों पर आरूढ़ किया। उनका तृतीय नेत्र जागृत था, इसलिए उनकी प्रज्ञा ने कीर्तिमानों के नव कोष रचे।'

साध्वीश्री ने आगे कहा, 'उनके जीवन में महावीर जैसी समता, बुद्ध जैसी करुणा, आचार्य भिक्षु जैसी आचार-निष्ठा और सत्यनिष्ठा, जयाचार्य जैसी प्रज्ञा, तथा तुलसी जैसी तेजस्विता के दर्शन होते थे। वे उपशांत कषाय के हिमालय थे। उपशम कषाय की साधना ने उन्हें अगणित ऊर्जाएँ प्रदान कीं। हमें भी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को साधनमय बनाना चाहिए।'

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा, 'जन्म से कोई व्यक्ति महान नहीं होता, अपने विशिष्ट गुणों से ही वह महानता के पथ पर अग्रसर होता है। जब वह मंज़िल तक पहुँचता है, तो सबके लिए प्रेरणा का प्रदीप बन जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ जी विशिष्ट गुणों के महानायक थे।' डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा की दिव्य प्रकाश और नई ऊर्जा के संवाहक आचार्य महाप्रज्ञ जी ने असंख्य जीवनों को उजास से भर दिया। अध्यात्म की ऊर्जा से उन्होंने अनगिनत लोगों को जागृत और ऊर्जा-सम्पन्न बनाया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा - आचार्य महाप्रज्ञ आत्मद्रष्टा और भविष्यद्रष्टा संत थे। उन्होंने अपनी प्रज्ञा से धर्मसंघ के स्वर्णिम भविष्य के अनेक आलेख लिखे।

साध्वी समत्वयशा जी ने मंच का प्रभावशाली संचालन करते हुए कहा, 'आचार्य महाप्रज्ञ समर्पण के शलाका पुरुष थे। वे धर्मसंघ में बिंदु बनकर आए और सिंधु बनकर महाप्रयाण किया।'

समदड़ी महिला मंडल ने मंगल संगान किया। भूपतराज खांटेड़, महावीर छाजेड़, बालक दियान एवं सुश्री प्रजल ने अपने-अपने भावपूर्ण प्रस्तुतिकरण से उपस्थित जनों को भावविभोर कर दिया।

सांडवा

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी के 16वें महाप्रयाण दिवस का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने महाप्रज्ञ अष्टकम के सुमधुर पाठ से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा, 'आचार्य महाप्रज्ञ केवल राष्ट्रसंत नहीं, वरन् विश्वसंत थे। उन्होंने संतत्व के मूल्यों, मानकों, आदर्शों और सिद्धांतों को जीवन की प्रयोगशाला में उतारकर अध्यात्म और धर्म को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया। उनके द्वारा आविष्कृत प्रेक्षाध्यान पद्धति एक ऐसी सुगम प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से विश्वजन अशांति से शांति, भ्रांति से क्रांति, वासना से उपासना और नर से नारायण की ओर अग्रसर हो सकते हैं।' इसी क्रम में साध्वी सोमश्री जी ने अपने संयम प्रदाता को भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ करुणा के साकार रूप थे। उन्होंने 'जय महाप्रज्ञ गुरु मेरे' सुमधुर गीतिका प्रस्तुत करते हुए उनके दिव्य व्यक्तित्व और कर्मशील कर्तृत्व को उजागर किया।

बजरंग भंसाली ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य द्वारा आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। संतोष देवी भंसाली ने गीत के माध्यम से वातावरण को महाप्रज्ञमय बना दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही।कार्यक्रम की रात्रिकालीन कड़ी में 'एक शाम महाप्रज्ञ के नाम' भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला।

श्याम नगर, जयपुर

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रबुद्ध शिष्या, बहुश्रुत 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 16वां महाप्रयाण दिवस श्रद्धा, जप, तप और ध्यान के माध्यम से मनाया गया। जयपुर के श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। तत्पश्चात तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम की बहनों ने सुमधुर स्वर लहरियों के साथ मंगल संगान प्रस्तुत किया।

तेरापंथी सभा जयपुर के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी विश्व की विलक्षण आध्यात्मिक विभूतियों में से एक थे। वे एक दार्शनिक, स्वतंत्र चिंतक, साहित्यकार और कुशल प्रवक्ता थे। उन्होंने अपने प्रेरक और रोचक संस्मरणों के माध्यम से श्रोताओं को आचार्य श्री की जीवनगाथा के प्रेरणादायक प्रसंगों से भावविभोर कर दिया। साध्वी वृंद ने साध्वीश्री द्वारा रचित गीत 'वंदना करो ज्योतिचरण से' की रोचक प्रस्तुति दी। साध्वी मधुलता जी ने अपने वक्तव्य में आचार्य श्री के दिव्य प्रसंगों को साझा किया, वहीं साध्वी मधुलेखा जी और साध्वी संस्कृति प्रभा जी ने भी श्रद्धाभाव से अपनी अभिव्यक्ति दी।

सभा के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, महिला मंडल सी-स्कीम की अध्यक्ष प्रज्ञा सुराणा और मधुर गायक संदीप भंडारी ने भी आस्था और श्रद्धा के भाव प्रकट किए। महिला मंडल की नवयुवतियों ने 'ग्रंथों से घिरे निर्ग्रंथ' व्यक्तित्व — आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की अनमोल साहित्य-संपदा को सुंदर शब्दचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन सुशीला नखत ने किया।

प्रेक्षाध्यान से डिप्रेशन जैसी बीमारी को किया जा सकता है दूर

कोयंबटूर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर द्वारा 'प्रेक्षा ध्यान और डिप्रेशन' विषय पर एक प्रेरक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

यह कार्यशाला प्रेक्षा फाउंडेशन एवं प्रेक्षा वाहिनी के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुई।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं महाप्राण ध्वनि के साथ की गई, जिससे वातावरण में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ। कार्यशाला में प्रेक्षा ध्यान प्रशिक्षिका मधु बांठिया ने 'अनन्त वीर्येभ्यो नमः' का तैजस केन्द्र पर मानसिक व वाचिक जप तथा ध्यान का अभ्यास करवाया।

उन्होंने बताया कि डिप्रेशन जैसी बीमारी का मूल कारण निराशा और असहिष्णुता होता है।

इसके समाधान हेतु प्रेक्षा ध्यान और अनुप्रेक्षा के नियमित अभ्यास को अत्यंत प्रभावी बताया।

उनके अनुसार ध्यान द्वारा मानसिक संतुलन, ऊर्जा एवं सकारात्मक सोच को विकसित किया जा सकता है, जिससे व्यक्ति धीरे-धीरे अवसाद से उबर सकता है।

कार्यशाला में बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने सहभागिता निभाई।

कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर की अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सहनशीलता, समर्पण और सेवा बना सकते हैं दीर्घजीवी परिवार

नेपानगर, मध्यप्रदेश।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में नेपानगर नगरपालिका अध्यक्षा भारती विनोद पाटिल द्वारा आयोजित 'टूटते रिश्ते - बिखरते परिवार' कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा, 'रिश्तों के रस को रिसने ना दें। ईंट पत्थर चूने से बना मकान होता है, घर परिवार नहीं। घर-परिवार वह होता है, जिसमें प्रेम प्यार का आंगन होता है, मर्यादा की दीवारें होती है, अनेकांत का दरवाजा होता है, विवेक की खिड़की होती है, बड़े बुजुर्गों की आशीर्वाद रुपी छत होती है, वह घर-घर ही नहीं बल्कि स्वर्ग बन जाता है। परिवार को दीर्घजीवी वे ही बना सकते हैं जिनमें सहनशीलता, समर्पण, सेवा और सापेक्षता का विकास हो।'

मुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्षा भारती विनोद पाटिल, थाना प्रभारी रीनू जायसवाल, नेपा मिल से राजेश मखानी, नेपानगर श्रावक समाज एंव सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर के माध्यम से रायपुर सकल जैन समाज द्वारा आयोजित भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति - 2025 अंतर्गत 16 दिवसीय आयोजन में 3 टेस्ट निःशुल्क प्रदान किए। सोलह दिनों में थाइरोइड, ब्लड शुगर और सीबीसी का कुल 513 लोगों द्वारा लाभ लिया गया। स्टाफ के साथ निर्मल गांधी, निकुंज साचला, वीरेंद्र डागा का विशेष सहयोग रहा।

एस्पायर आर्क का आयोजन

कामरेज। तेरापंथ युवक परिषद कामरेज के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल कामरेज द्वारा एस्पायर आर्क का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य स्पीकर के रूप में ब्लू ब्रिगेड मेंबर अंकुर बाफना एवं को-स्पीकर के रूप में कौशल चंडालिया की उपस्थिति रही। इसके साथ तेरापंथ युवक परिषद कामरेज के पदाधिकारीगण की भी उपस्थिति रही। किशोर मंडल प्रभारी लोकेश मांडोत ने किशोरों को सम्बोधित किया।

विश्व नवकार महामंत्र दिवस मनाया

डेगाना। एमपी गली स्थित जैन भवन में विश्व नवकार महामंत्र दिवस मनाया गया। सुबह 8:01 बजे से 9:36 बजे तक चले कार्यक्रम में नवकार मंत्र का एक लय जप किया गया। जैन समाज के सभी महिला-पुरुष इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सामायिक एवं जप के माध्यम से धर्म आराधना की गई।

सामाजिक सेवा कार्य

साउथ कोलकाता। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा और केबीडी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क नेत्र जांच, चश्मा एवं दवा वितरण और ऑपरेशन कैंप का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। तेरापंथ युवक परिषद साउथ कोलकाता ने महावीर सेवा सदन के साथ मिलकर इस कैंप के सुचारू संचालन में सहयोग दिया। नमस्कार महामंत्र के साथ कैंप का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात रोगियों का परीक्षण शुरू किया गया। नेत्र जांच एवं चश्मा वितरण में लगभग 200 रजिस्ट्रेशन हुए। सेवा कार्य में तेयुप साउथ कोलकाता के कार्यसमिति सदस्यों ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **बालोतरा।** स्वर्गीय दीपक कुमार जैन (संघवी) के सुपुत्र-पुत्रवधु सचिन-प्रिया के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेंद्र वैद मेहता और रोशन बागरेचा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। शिशु का नाम 'वर्धमान' रखा गया।

■ **राजाजीनगर।** राजलदेसर निवासी बैंगलोर प्रवासी सरिता कमल हिरावत के सुपौत्र एवं अनुज-सुरुचि के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से आरपीसी लेआउट स्थित अर्हम भवन में संस्कारक विकास बांठिया एवं रनीत कोठारी ने द्वारा संपादित किया गया। नवजात शिशु का नाम 'यथार्थ' रखा गया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **गंगाशहर।** बीकानेर निवासी शांतिलाल कोचर के सुपुत्र सुमित का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी शान्तिलाल डाकलिया कि सुपुत्री मीनू के साथ जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। जैन संस्कारक धर्मेन्द्र डकालिया, भरत गोलछा, देवेंद्र डागा, विनीत बोथरा ने विवाह संस्कार विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** स्व. भरत कुमार-अरुणा जैन के सुपुत्र श्रेयांश जैन का शुभ विवाह चाड़वास निवासी दिल्ली प्रवासी अजीत कुमार बैद की सुपुत्री अनिशा जैन से जैन संस्कार विधि से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैंगाणी एवं बिरेंद्र बोहरा ने मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम को संपादित करवाया।

■ **जालना।** जालना प्रवासी स्व. इंदरचंद-कमलाबाई दुग्गड के सुपुत्र शुभम एवं मेहकर प्रवासी कमलेश-ललिता आँचलिया की सुपुत्री प्रेक्षा का पाणिग्रहण संस्कार, जालना के गणेश भवन में सानंद संपन्न हुआ। संस्कारक अभिजीत बैंगानी, पुणे, नितिन नवलखा, जालना, कल्पेश गेलडा, शहादा, निर्मल खिवेसरा, पुणे, पियूष छाजेड, पिंपरी चिंचवड़ ने विवाह संस्कार विधि संपादित करवाई।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **नोखा।** राजेश दुगड़ के नूतन प्रतिष्ठान सरिता इंटरप्राइजेज का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक आनंद सुराणा एवं छतरसिंह सिंह चौरड़िया ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **बेंगलुरु।** सी टी स्ट्रीट, बेंगलुरु स्थित संतोष - शुभद्रा बाँठिया के नूतन प्रतिष्ठान एम. पी. डायमंड्स का शुभारंभ जैन संस्कारक आदित्य मांडोत द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **गुवाहाटी।** छापर निवासी विजय सिंह-सम्पत देवी नाहटा के सुपुत्र रवि कुमार-मिनू नाहटा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विनीत लूनिया एवं तेयुप अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **उत्तर कोलकाता।** संजय-ममता बिनायकिया के नवनिर्मित गृह का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक गगनदीप बैद एवम् वीरेंद्र बोहरा ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

ASPIRE ARC इवेंट में किशोरों को मिला मार्गदर्शन और प्रेरणा

बारडोली।

तेरापंथ युवक परिषद बारडोली के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल बारडोली द्वारा आयोजित ASPIRE ARC इवेंट का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरों में धर्मसंघ के प्रति जुड़ाव, सामूहिक विकास और नेतृत्व कौशल का विकास करना रहा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में ब्लू ब्रिगेड सदस्य पुलकित कोठारी एवं सहवक्ता कुशल चंडालिया उपस्थित रहे। साथ ही कार्यक्रम में अभातेयुप के उपाध्यक्ष जयेश मेहता, ब्लू ब्रिगेड सदस्य उत्सव मेहता एवं अंकुर बाफना की भी विशेष उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत भाषण के साथ हुआ। तत्पश्चात अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने किशोरों को उद्बोधित किया। मुख्य वक्ता एवं को-स्पीकर ने TKM AXIS के विभिन्न आयामों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी और किशोरों को धर्मसंघ से सक्रिय रूप से जुड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि मिल-जुलकर कार्य करने से संगठन और स्वयं दोनों का विकास संभव है।

कार्यक्रम के दौरान आगामी तीन महीनों में होने वाली गतिविधियों के बैनर का अनावरण किया गया। सत्र को रोचक बनाने के लिए वक्ताओं ने किशोरों के साथ कुछ इंटरैक्टिव गेम्स भी खेले, जिनमें न केवल मनोरंजन हुआ बल्कि टीमवर्क, नेतृत्व और त्वरित निर्णय जैसे गुणों की भी शिक्षा मिली। कार्यक्रम में लगभग 15 किशोरों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

श्रेष्ठता के पेरामीटर

● साध्वी शुभप्रभा ●

श्रेष्ठ कौन?

बारह महीनों में बैसाख माह श्रेष्ठ माना जाता है। ऐसा बताया जाता है कि त्रेता युग का प्रारंभ इसी मास में हुआ था। देवर्षि नारदजी के अनुसार – विद्याओं में वेद, मंत्रों में प्रणव, वृक्षों में कल्पवृक्ष, धेनु में कामधेनु, देवताओं में विष्णु, वैष्णवों में शिव, वर्णों में ब्राह्मण, प्रियों में प्राण, नदियों में गंगा, तेजों में सूर्य, अस्त्र-शस्त्रों में चक्र, धातुओं में स्वर्ण, रत्नों में कौस्तुभ मणि उत्तम हैं, वैसे ही महीनों में बैसाख उत्तम है। इसे पढ़ते ही मेरे मन में यह विचार आया कि यदि इसमें एक बिंदु और जोड़ दिया जाए, तो शायद अत्युक्ति नहीं होगी – वह है, 'संतों में श्रेष्ठ हैं आचार्य महाश्रमण।'

मेरे इस चिंतन पर परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने पूर्व में ही मुहर लगा दी थी जब उनके समक्ष यह जिज्ञासा आई कि संत कैसा होना चाहिए? प्रत्युत्तर में उन्होंने फरमाया – 'महाश्रमण मुदित जैसा।' 'महाश्रमण अष्टकम्' में आदरास्पद शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने इस प्रसंग का उल्लेख भी किया है।

सन् 2014 के चातुर्मास में दिगंबर मुनि तरुणसागरजी ने दिल्ली की विशाल सभा में, सभी जैन संप्रदायों की उपस्थिति में कहा था – 'हम तो सब श्रमण हैं और ये महाश्रमण हैं।' उनके इस कथन पर पूरा हॉल 'अर्हम्' ध्वनि से गुंजायमान हो उठा।

मूर्तिपूजक गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी ने अपने अभिभाषण में कहा – मेरे मन में दो व्यक्तियों के प्रति अत्यंत आदरभाव है – एक हैं दिगंबर आचार्य विद्यासागरजी और दूसरे हैं आचार्यश्री महाश्रमणजी, जिनका जीवन ही प्रेरणा है। इन्हें प्रवचन करने की आवश्यकता ही नहीं, इनके आचरण और व्यवहार में समता का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। ये किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी नहीं करते। हर क्रिया को शांतचित्त और भावपूर्वक करते हैं। ऐसे गरिमामय युगपुरुष का अवतरण धरती पर यदा-कदा ही हो पाता है। सच ही कहा है किसी कविचेता ने इन पंक्तियों में–

सदियों धरती तप करे, वर्षों करे पुकार।
महाश्रमण से संत का, तब होता अवतार।।

यही नहीं, माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक कार्यक्रम में गुवाहाटी जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक बड़ा होर्डिंग देखा, जिसमें आचार्यश्री महाश्रमण का चित्र था। उसे देखते ही वे गाड़ी से उतरे और वंदन मुद्रा में प्रणत होते हुए बोले – मैं इस त्याग और संयम की प्रतिमूर्ति को नमन करता हूं, प्रणाम करता हूं।

प्रणम्य कौन?

तब मन में प्रश्न उठा – महातपस्वी आचार्य महाश्रमण का इतना माहात्म्य क्यों? जन-जन के मन में उनके प्रति इतना आकर्षण क्यों? समाधान की लहरें भीतर में उठीं – जिनके हृदय में आसमान जैसी विशालता, पैरों में पवन-सी गतिशीलता, वाणी में आगम सूक्तों की प्रतिध्वनियां अनुगूंजित हों, चेहरे पर चिन्मय चेतना की मधुर मुस्कान निरंतर प्रवाहित हो, भाग्य-पुरुषार्थ-प्रज्ञामयी रत्नत्रयी के संवाहक हों, अंतःकरण में ज़मीं पर खड़े रहकर नभ को छूने की अदम्य लालसा हो, धैर्य-धर्म-पुण्य और प्रताप सहचर हों, मन-वचन-काया एवं कार्यजा क्षमता एकदिशागामी या ऊर्ध्वलक्ष्यगामी हो, मिताहार-मितभाषण-मैत्री-प्रतिक्रिया विरति और भावक्रिया की उपसंपदाएं आत्मसात हों, आत्मा की सतत रक्षा करनी है – इस भगवद्वचन की अहर्निश अनुप्रेक्षा हो, प्रतिपल अहोविहार में रमण करते हों, दिल और दिमाग में 'शुभं भूयात् – कल्याणं भूयात् – मंगलं भूयात्' की मंगलभावनाएं भावित हों, आत्मबोध–जगतबोध–जनबोध–जीवनबोध–संयमबोध–वैराग्यबोध–आचारबोध–व्यवहारबोध–संस्कारबोध–विचारबोध–जैनप्रबोध–तेरापंथप्रबोध–श्रावकसंबोध–मानवप्रबोध की विशिष्ट अर्हता हो – वही सबके लिए प्रणम्य और वरेण्य होता है।

सुना, पढ़ा और देखा भी है कि जिन-जिन अंधियारे गलियारों से वे गुज़रते हैं, वहां मानवीय विश्वास की आलोकमयी किरणें बिछ जाती हैं। वे लोगों के रोम-रोम में बस गए हैं। जिसे उन्होंने दृष्टि उठाकर देखा, उसके प्रश्न समाहित हो गए। जिसे एक बार संबोधित किया, उसकी उखड़ती आस्था जम गई। पांव-पांव चलकर धरती को नापा तो उसके हर हिस्से से भावात्मक रिश्ता कायम हो गया। अपने क्रियाकलापों से, चिंतन से उन्होंने अनेकानेक फौलादी कहानियां रचीं। सर्वत्र आत्मीयता का प्रसाद बांटा। इसीलिए वे सबके अपने बन गए हैं। आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हाथ आगंतुकों के मन को तुष्टि प्रदान कर रहे हैं तथा सुख-शांति-समृद्धि-समत्व पाने का संकेत दे रहे हैं।

श्रद्धेया महाश्रमणीजी की इन पंक्तियों से उक्त पहलुओं की पुष्टि होती है। उन्होंने लिखा –

'टिकते चरण जहां गुरुवर के, धरा तीर्थ बन जाती है।
नैतिकता का नाद गूंजता, बिना तेल जलती बाती है।।

दूसरी बात– मैंने 29 जनवरी 2024 के दैनिक भास्कर में एक संवाद पढ़ा – हाई आईक्यू वाले में तीन क्वालिटीज़ होती हैं – एनालिटिकल थिंकिंग, प्रॉब्लम सॉल्विंग, लॉजिकल रीज़निंग। स्टीव जॉब्स, जेफ बेज़ोस, मार्क ज़ुकरबर्ग, एलन मस्क, लैरी पेज, बिल गेट्स आदि महानुभाव हाई आईक्यू की गणना में आते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में जब मैंने आचार्यश्री महाश्रमण को देखा, समझा और चिंतन किया, तो मुझे लगा कि ये तीनों गुण तो आपश्री में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहे हैं। यद्यपि आचार्यश्री का कार्यक्षेत्र उनसे भिन्न है, तथापि उनकी इन विशिष्टताओं की सुगंध को यत्र-तत्र-सर्वत्र अनुभव किया जा सकता है। स्वल्प चर्चा में ही ये चित्रांकित हो सकती हैं –

1. एनालिटिकल थिंकिंग –

आचार्यवर ऋतंभरा प्रज्ञा के धारक हैं। इसलिए वे हर बिंदु, हर पहलू, हर घटना, हर नियम, हर मर्यादा, हर कथ्य, हर तथ्य, हर चर्या का सूक्ष्मता से अवलोकन करते हैं। क्या, क्यों, कब, कैसे, कहां, कितनी – ये प्रश्न उनके मस्तिष्क में सदैव सक्रिय रहते हैं। वे संदर्भित समस्या का समाधान आलोड़न-विलोड़न द्वारा प्रस्तुत कर देते हैं। उनका मतिज्ञान विशद है, फलतः ईहा-अपोह-मार्गणा-गवेषणा के माध्यम से वे मूल तक पहुंच जाते हैं। गंभीर श्रुतज्ञान और प्रवर मेधा से वे समानांतर समाधान भी खोज लेते हैं। वे आत्माराधना और श्रुतोपासना – इन दो सशक्त आलंबनों से सुसज्जित हैं। उनका माइंडफुलनेस सधा हुआ है।

सन् 2021 के भीलवाड़ा चातुर्मास में एक सामूहिक गोष्ठी में चर्चा चली – क्या साध्वी आचार्य बन सकती है? पूज्यवर ने जिस ढंग से इस विषय को आगमिक, श्रुतानुश्रुत, पारंपरिक, आधुनिक, व्यावहारिक और तार्किक दृष्टि से प्रस्तुत किया, वह चित्त को आंदोलित करने वाला था।

2. प्रॉब्लम सॉल्विंग –

आज समस्याएं चारों ओर व्याप्त हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विदेश – सभी इसकी चपेट में हैं। फलतः तन-मन-कर्म-चिंतन और भावधारा सभी अस्वस्थ हो गए हैं। ऐसे संकट में सबकी निगाहें अध्यात्म शिखर पुरुषों की ओर हैं। आचार्यश्री अपनी भूख, नींद, कार्यों को गौण मानकर, लोककल्याण हेतु सतत प्रयासरत हैं। व्यक्तिगत संवाद, प्रवचन, संगोष्ठी, साहित्य सर्जना और उनकी अहिंसा यात्रा – नैतिकता का प्रसार, नशामुक्ति, सद्भावना – इनके माध्यम से उन्होंने शांति का मार्ग प्रशस्त किया।

3. लॉजिकल रीज़निंग –

उनका मानना है – 'ज्ञानार्जन में हो तर्क, पर आज्ञा-आराधन में रहें सतर्क।' वे बाल्यकाल से ही जिज्ञासु रहे हैं। हर विषय की गहराई में जाकर समझने का प्रयास करते हैं। जब तक कोई बात आत्मसात नहीं होती, वे प्रश्न करते रहते हैं। मैंने स्वयं देखा है – वे तर्क में उलझाते नहीं, पर अपनी शंका का समाधान अवश्य खोजते हैं।

बुद्धि के आठ गुण – शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, ऊह, अपोह, अर्थविज्ञान और तत्वज्ञान – उनमें विद्यमान हैं। इसी कारण वे नवीन तथ्यों के साथ-साथ पुरानी मान्यताओं की विवेचना कर, निष्कर्ष निकालने में सक्षम हैं।

अंत में केवल यही भाव-सुमन अर्पित कर सकती हूं –

यह चिर वसंत फूले अनंत, जीवन शाखा पर स्वर्ण फूल।
हम शीश चढ़ाते रहें सदा, शीतल चंदन सी चरण धूल।।

बजी शहनाइयां! गण में आज

● साध्वी आस्थाप्रभा ●

बजी शहनाइयां! गण में आज,
नेमानंदन ने पहना है हां, भिक्षु गण का ताज।।

1. सोहनी सूरत, मोहनी मूरत, चिहुं दिशि फैली है कीरत,
शौर्य समुन्नत, श्रम है अनवरत, जग को है तेरी जरूरत।
है तेज निराला-2, तू किस्मत वाला, पिलाता सुधारस प्याला।।

2. अखियां तेजस्वी, वाणी वर्चस्वी आभा तेरी है ओजस्वी,
महामनस्वी तरुण तपस्वी, गौरव गाथा यशस्वी।
परम कृपालु-2, तुम हो दयालु, झुकते हैं लाखों श्रद्धालु।।

3. तुलसी सी प्रभुता, महाप्रज्ञ ऋजुता, भाल जो चमचम चमकता,
समवसरण में, ज्योतिचरण ये, महावीर ज्यों पग धरता।
दो हाथ उठाएं-2, आशीष दिराएं, भक्तों के दिल खिल जाए।।

लय - डफली वाले

ज्योति भरो ज्योतिर्धारी

● साध्वी अनुशासनश्री ●

महाप्रज्ञ रा सक्षम पटधर, महाश्रमण महिमाधारी।
भिक्षु री गादी दीपावै महाश्रमण युग अवतारी।।

1. गुरू तुलसी हा कुशल पारखी, थांरे कौशल ने निरख्यो,
युवाचार्य रा अंतरग सहयोगी कर पौरूष परख्यो।
चंदेरी में महाश्रमण पद सृजन हुयो शासन हरख्यो।
भादूड़ी बारस ने पाया युवराज अतिशयधारी।।

2. वैशाखी सुद दशमी ने, साध्वीप्रमुखा आह्वान करयो,
'संघ सारथे थामो वल्गा' उच्चस्वर संगान करयो।
जय-जय ज्योतिचरण प्रभु, जय-जय महाश्रमण मंगलकारी।।

3. मित भोजी, मित भाषी, स्वष्टवादिता प्रभु री अलबेली,
दिव्य दिवाकर, करूणा सागर अद्भुत अनुशासन शैली।
स्थितप्रज्ञता देख अलौकिक विस्मित है दुनिया सारी।।

4. इमरत झरता नयन युगल, पुण्याई रा पुतला अभिराम,
तेजस्वी आभा मण्डल ओ जन-जन री आस्था रो धाम।
देव कंवर सो रूप निरालो, जीकारो संकटहारी।

5. रहै निरामय गात्र आपरो, कोड दीवाली राज करो,
'दीवसमा आयरिया' गणिवर गण में नव उद्योत भरो।
करै कामनां थारी किरणां, ज्योति भरो ज्योतिर्धारी।।

लय - ब्याऊं बीनणी बिलखूं

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

Khammaghani Annadata

● Sadhvi Dikshaprabha ●

'Annadata Khammaghani!'

Heads bowed in devotion, hands folded in dedication, and eyes filled with gratitude! I kept hearing this from devotees addressing Gurudev with all their heart. But I wondered — does the adjective fit? As a Gen-Z logical mind, I kept asking myself: Annadata means the provider of food, so how can Acharyashri be called Annadata when he does not provide us with any food?

This curiosity led me to seek an answer, but for some reason, I couldn't accept most of the explanations—until I found the one that led to a deep realization. Anna is connected to Aahaar, which means nutrition. According to Jain philosophy, there are three types of Aahaar:

1. Oj Aahaar
2. Rom Aahaar
3. Kawal Aahaar

This is how Annadata Acharyashri provides us with these three Aahaars:

Oj Aahaar

This is the very first nutrition received by the soul — the foundation of all development. When a child is conceived in the mother's womb, it is through Oj Aahaar that it gets the energy to develop further. In a similar way, when a soul enters the Terapanth Dharm Sangh, just after Diksha, 'Annadata' provides us with our first Aahaar — Anushashan ka Oj Aahaar, the first nutrition of discipline. This discipline becomes the basis of our development.

Khamaghani, Oj Aahaardata!

Kawal Aahaar

Just as the body draws strength from morsels of food, the soul too hungers for sustenance — not of taste, but of truth. Kawal Aahaar is nourishment received through the mouth, but in the life of a sadhak, the true Kawal Aahaar comes from the vachan of the Acharya — each word, a divine morsel; each direction, a sacred spice; each gesture, a fragrant offering.

Annadata, you have not only filled my bowl with wisdom, but my being with resolve. Even the physical gifts you provided — the pen to write, the kerchief — are not just gifts, but tools for tap.

Thank you, O Kawal Aahaardata, for feeding not just my stomach, but my spirit. Khammaghani!

Rom Aahaar

This is the unseen nourishment, absorbed not through the mouth or mind, but through every pore of our being — through sunlight and the environment. Just as the air carries fragrance, the environment around you — not just physically but even from afar — carries the essence of your presence. Oh Annadata! In your proximity, every breath becomes a blessing, and every moment, a meditation. Your aura radiates like a gentle breeze, awakening every cell. Rom-rom se harsha utpann hota hai.

May my skin drink deeply from this sacred atmosphere. May each pore be a window to your wisdom. May I continue to be bathed in your purity, your power, and your peace.

Khammaghani, Rom Aahaardata!

On this auspicious day —

Annadata, bless us that we make the most — and more — of the three Aahaars you provide us.

Bless us that we intake the nutrition to fulfill all your dreams!

Oh Lord! Bless me that I continue to receive Aahaar from you until my last moment.

My soul is Aaharak — and with your nutrition, may I reach the Anaharak stage the soonest.

Once again, this time with a logically self-satisfied brain and a devotion-dipped heart:

Annadata Khammaghani!
Annadata Khammaghani!
Annadata Khammaghani!

तुम को हम आज बधाएं

● डॉ. समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

हे महातपस्वी गुरुवर, तुम को हम आज बधाएं।
तुम हो इस जग में अनुपम, फिर भी देते उपमाएं।।

तुम सूरज सम तेजस्वी, नभ चंदा जैसे शीतल,
तुम सागर जैसे गहरे और गंगा जैसे निर्मल।
दीपक सम जलकर पल-पल, जीवन में ज्योत जलाएं।।

सुमनों सम सुरभि फैलाते, तुम जल ज्यों जीवन दायी,
तुम अग्नि सम हो प्रकाशी, वायु जैसे वरदायी।
तुम कल्पवृक्ष सम करते, सबकी पूरण आशाएं।।

तरु ज्यों देते मीठे फल, तुम माली ज्यों रखवारे,
तुम गगन समान सुविस्तृत, तुमसे है गण में बहारें।
तुम सोने से भी महंगे, सारथी बन पथ दिखलाए।।

क्षमाशील धरती सम हो, शंख समान समुज्जवल,
बन सुदृढ़ नींव महल की, भरते शिष्यों में संबल।
तव पदाभिषेक, जन्मोत्सव, दीक्षोत्सव मंगल गाएं।।

लय - ए मेरे वतन के लोगों

जय ज्योतिचरण वन्दन

● साध्वी संयमलता ●

जय ज्योतिचरण वन्दन, जय महाश्रमण वन्दन,
अभिवेक दिवस पर हम करती हैं अभिनन्दन।
इस जन्म दिवस पर हम करती हैं अभिनन्दन।
इस युवा दिवस पर हम करती हैं अभिनन्दन।
धन्य धरा सरदारशहर में उतरे ज्योतिचरण,
दुगड़ कुल मां नेमां पितु झूमर मन पुलकन।।

मुस्कान भरा मुख मंडल -2, ये सौम्य शान्त मोहक मुद्रा मन भाए,
अमृतमय तेरी वाणी -2, सुनने को हर मानव ललचाए।
शुभ दृष्टि पड़े जहां खिल जाए भाग सुभाग,
ये खुश नसीबी हम सबकी मिले महाश्रमण-महाभाग।।

कमनीय कीर्तिधर तेरी-2, ये सुयश कीरतियां पहुंची देश-विदेश,
ओजस्वी अहिंसा यात्रा-2, से दिया विश्व को तुमने शांति संदेश।
डगर-डगर चल नगर-नगर, पंहुचे सिक्किम भूटान,
नशामुक्ति नैतिकता सद्भाव तेरे अवदान।।

इतिहास पुरुष हो गुरुवर-2, हर रोज नए-2 गढ़े इतिहास,
संकल्प और साहस की-2, बस्तर यात्रा बनी पृष्ठ इक खास।
तुम शांतिदूत, हो तपःपूत, गौरव गाता है जहान,
सक्षम महाप्रज्ञ पट्टधर तुलसी सा तेज महान।।

लय - क्या खूब लगती हो

मंगल भावां रो ले उपहार

● शासनश्री साध्वी पानकुमारी ●

महाश्रमण आचार्य प्रवर री आरती उतारां म्हैं,
मंगल भावां रो ले उपहार हो।।

सोने रो सूरज ऊग्यो है, भैक्षव शासन आंगण में,
दूध रो बरसे अमृत धार हो।।

छायो है सुरंगों रंग तेरापंथ शासन में,
खुशियां रो उमड्यो पारावार हो।।

गुरुदेव रे सूझ-बूझ री जावां म्हैं बलिहारी हो,
हीरो निकल्यो सुखकार हो।।

मंगल बेला में म्हैं आज मोत्यां चौक पुरावां हो,
कुंकुम रा पगल्या उतरया आंगणे।।

करो आपश्री राज जुग-जुग शासन हो सांतरी,
तेरापंथ गण री जय जय कार।।

लय - तेजा रे

वैशाख महीना पावन-पावन

● साध्वी कारुण्यप्रभा ●

पुलकित हैं हम सबके आनन, खुशियों का शुभ दिन है आया।
नेमा झूमर नन्दन प्यारा, प्रभु महाश्रमण सबको भाया।।
मुस्कानों का बहता झरना, आखों से प्रसृत है करूणा।
वत्सलता के महासागर से, यह संघ तरुवर विकसाया।।
हे शांतिदूत ! तव कृपा दृष्टि पाने को लालायित दुनिया।
आधि व्याधि सब मिट जाए जब गुरु का है सिर पर साया।।
गुरु तुलसी सा व्यक्तित्व तेरा, देवकंवर सा स्वरूप तेरा।
कोमलता महाप्रज्ञ की सी, कंचन सी कोमल है काया।।
सम, शम, श्रम की सूरत मनहारी, बढ़ी त्रिभुवन में महिमा भारी।
खुद पर खुद का अनुशासन है, जन-जन ने गौरव है गाया।।
अद्भुत तेरी प्रवचन शैली, आगम सूत्रों की सौरभ फैली।
जय ज्योतिचरण - जय महाश्रमण, यह घोष आज हर मुख छाया।।
जन्मोत्सव, दीक्षा का उत्सव, पट्टोत्सव का शुभ दिन आया।
वैशाख महीना पावन-पावन, गण में अनहद खुशियां लाया।।

लय - दुनिया में संघ

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चतुर्थ चयन दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

प्रसादत्रयी के आलोक से उद्भासित साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

● साध्वी मुदितयशा ●

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के 68वें जन्मदिवस का प्रसंग था। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया— जीवन में तीन बातों का विशेष महत्व हैः 1. शरीरबल, 2. मनोबल या मानसिक प्रसन्नता, 3. मानसिक शांति। साध्वीप्रमुखा जी का मनोबल अच्छा है और सहज मानसिक शांति बनी रहती है। इन दोनों का होना सौभाग्य का प्रतीक है। ये दोनों यदि हैं तो कदाचित् शरीर की दृष्टि से कोई कठिनाई भी आ जाए तो वह ज्यादा प्रभावित नहीं करती। पार्श्वस्थित मुख्यमुनिश्री ने निवेदन किया— गुरुदेव! कभी-कभी की बात छोड़ दें, प्रायः स्वास्थ्य भी अनुकूल रहता है। शरीरबल को भी 90% अंक दिए जा सकते हैं।

सारी बात सुनकर आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा प्रणीत एक श्लोक सहसा मेरे स्मृतिपटल पर उभर आया। आचार्य महाप्रज्ञजी लिखते हैं—

देहप्रसादो रसनाजयेन, मनःप्रसादः समताश्रयेण।
दृष्टिप्रसादो ग्रहमोचनेन, पुण्यत्रयीयं मम देव! भूयात्।।

शारीरिक स्वास्थ्य और श्रमशीलता

साधना का पहला और सशक्त माध्यम है शरीर। इसीलिए कहा गया है— 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।' जिसका शरीर स्वस्थ है, वह सक्रियता का जीवन जी सकता है। उसे कितना भी श्रम करना पड़े, वह कभी पीछे नहीं हटता। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के जीवन में श्रमशीलता है। जहां श्रम की सुवास होती है, आने वाला हर व्यक्ति स्वतः आकर्षित होता है। यात्रा के दौरान आचार्यप्रवर नए-नए क्षेत्रों में पधारते हैं। लोग अपने-अपने घरों में पधारने की प्रार्थना करते हैं। साध्वीप्रमुखाजी प्रायः दूर-दूर तक के घरों में भी पधारती हैं। चातुर्मास के समय भी, चाहे किसी के जन्मदिन का प्रसंग हो या शादी की सालगिरह का, बीमार या वृद्ध को दर्शन देने का अवसर हो या तपस्या के पारणे का, प्रायः प्रतिदिन गोचरी के लिए पधारना हो जाता है। कभी-कभी तो दोनों-तीनों समय भी कहीं न कहीं पधारना होता है। श्रम के साथ आपकी सहजता और प्रसन्नता अनुकरणीय है। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में— 'तपे बिना कोई ज्योति नहीं बनता और खपे बिना कोई मोती नहीं बनता, इसलिए श्रम करो, सफल बनो।' साध्वीप्रमुखा जी की श्रमशीलता उनकी सफलता का स्वयंभू साक्ष्य है।

आहार-संयम के प्रयोग

हमारे शरीर के लिए आहार जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है आहार का संयम और अस्वाद की साधना। साध्वीप्रमुखाश्रीजी का आहार-संयम अद्भुत है। प्रायः आहार-संयम और स्वादविजय की साधना के प्रयोग करती रहती हैं। आपके द्वारा किए गए कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं—

- समणश्रेणी में वर्षों तक चीनी का परिहार।
- प्रत्येक रविवार को नमक का और अमावस्या को अन्न का परिहार। बाद में अमावस्या को उपवास करना शुरू कर दिया।
- दिनभर में 21 द्रव्यों की सीमा।
- तले हुए पदार्थों का पूर्णतया वर्जन।
- दीक्षित होने के कुछ समय बाद मिष्ठान्न का त्याग। उल्लेखनीय है कि साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी द्वारा प्रदत्त ग्रास इसका अपवाद था, अब यह नियम भी मानो निरपवाद बन गया है। शरीर और साधना के लिए हितकर वस्तु को, चाहे वह बेस्वाद और कड़वी ही क्यों न हो, आप सहजता से ग्रहण कर लेती हैं। मात्र स्वाद के आधार पर कभी भी किसी वस्तु को ग्रहण नहीं करतीं। आहार-संयम और अस्वाद की साधना का ही परिणाम है कि कभी-कभी शारीरिक कठिनाई आती तो है, पर ज्यादा बाधित नहीं करती। स्वल्प समय में ही स्वस्थ होकर आप अपनी मूल दिनचर्या में आ जाती हैं।

साधना का एक महनीय उपक्रम है- तपस्या। कुछ व्यक्ति तपस्याएं कर लेते हैं, पर आहार का संयम नहीं कर पाते हैं। कुछ आहार संयम कर लेते हैं, पर उपवास करना भी उनके लिए कठिन होता है। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी कार्य की व्यस्तता के चलते लंबी तपस्या तो नहीं करती, पर उपवास, बेला, तेला आदि करने की अभिरूचि बनी रहती है और बड़ी सहजता के साथ करती भी हैं। गुरुकुलवास में जब भी पचरंगी का अनुष्ठान होता, आप प्रायः पंचोले में अपना नामांकन कराती। आपके मन में नए-नए संकल्प उठते रहते हैं। तुलसी जन्म शताब्दी पर संकल्प कर लिया— इस वर्ष मुझे सौ उपवास करने हैं। उस वर्ष आपने सलक्ष्य सौ से अधिक उपवास करके अपने संकल्प को मानो शिखर तक पहुंचा दिया। पिछले काफी वर्षों से आपके प्रतिमाह पांच उपवास का क्रम चल रहा था। सन् 2020 में छह और सन् 2021 में प्रतिमाह सात उपवास करने का संकल्प कर लिया। प्रतिदिन नवकारसी करना, विहारों में प्रायः मौन और चौविहार या तिविहार प्रहर करना और कुछ न कुछ त्याग प्रत्याख्यान करते रहने में आपकी नैसर्गिक रुचि रहती है। इसे विशेष जागरूकता का भी प्रतीक माना जा सकता है। इस प्रकार आहार-संयम और अनाहार दोनों तरह की तपःसाधना से अनुप्राणित आपका जीवन वर्तमान युग की भोगवादी मानसिकता में जीने वालों के लिए जीवन्त प्रतिबोध है।

मानसिक प्रसन्नता का आधार है समता

जीवन की सफलता का दूसरा महत्वपूर्ण घटक है— मानसिक प्रसन्नता। इसकी पृष्ठभूमि में समता की प्रभावी भूमिका रहती है। जहां जीवन है, वहां सुख-दुःख, अनुकूलता-प्रतिकूलता, संयोग-वियोग की धाराएं साथ-साथ प्रवहमान रहती हैं। जैसे उदित होते सूर्य की भांति अस्त होता सूर्य भी रक्तिम आभा लिए हुए होता है, वैसे ही कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व हर स्थिति में सदा एकरूप रहते हैं। उनके भावों की पवित्रता का ग्राफ कभी नीचे नहीं आता। ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्वों में एक नाम साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का लिया जा सकता है।

सौम्यता और मृदुभाषिता

समता की साधना में वही व्यक्ति अवस्थित रह सकता है, जिसके जीवन में सहिष्णुता, संवेग-नियंत्रण और उपशम का भाव सधा हुआ है। आचार्य महाप्रज्ञजी के अनुसार— 'जिसके जीवन में सहिष्णुता होती है, वह दूसरों पर भार नहीं बनता, बल्कि उसमें भारवहन की क्षमता आ जाती है। इसी तरह जिसका अपने संवेगों पर नियंत्रण है, वह बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकता है।' साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी की सहिष्णुता और संवेग-नियंत्रण की साधना विलक्षण है। आपने 'उवसमसारं सामण्णं' की आर्षवाणी को अपने जीवन में आत्मसात किया है। आपके व्यवहारों में सौम्यता और वाणी में मृदुता रहती है। किसी की भूल होने पर आप उपालंभ देती हैं, पर कठोर शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करतीं। साधना के पथ पर आगे बढ़ने वाला समाधिस्थ तभी रह सकता है, जब वह समता की साधना में निष्णात होता है। कहा जाता है – 'साम्यं श्रितः स्यात् परमात्मरूपः' - समत्व का आश्रय लेने वाला परमात्म-रूप बन जाता है।

तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञजी करुणा के सागर और ध्यान के शिखर पुरुष थे। साध्वीप्रमुखाजी को निकटता से उनकी सेवा का अवसर मिला। आपने उनकी अनन्य कृपा प्राप्त की। सन् 2010 में अकस्मात् उनका महाप्रयाण हो गया। रिक्तता के उन क्षणों में भी आपकी समता और संतुलन देखकर आश्चर्य की अनुभूति होती थी। उस चातुर्मास में आने वाले अनेक लोगों ने कहा — महाराज ! आपकी समता और सहजता स्तुत्य है, हमारे लिए तो प्रेरक बोधपाठ है। जो व्यक्ति समता और संतुलन की डोर से बंधा रहता है, वह नित नई ऊंचाइयों का स्पर्श करता है। उसकी प्रसन्नता को कोई खंडित नहीं कर सकता। 'मनःप्रसादः समताश्रयेण' से भावित आपका जीवन सबके लिए प्रेरणा है।

दृष्टि बनाम सृष्टि

प्रसादत्रयी से जुड़ा तीसरा तत्व है- दृष्टिकोण की निर्मलता। आचारांग सूत्र का प्रसिद्ध सूक्त है— **'समियं ति मण्णमाणस्स समिया वा असमिया वा समिया होइ उवेहाए। असमियं ति मण्णमाणस्स समिया वा असमिया वा असमिया होइ उवेहाए।'** अर्थात जिसकी दृष्टि सम्यक् है, उसके लिए असम्यक् भी सम्यक् बन जाता है। जिसकी दृष्टि असम्यक् है उसके लिए सम्यक् भी असम्यक् में परिणत हो जाता है। इसलिए दृष्टिकोण सम्यक् और सकारात्मक रहे, यह बहुत आवश्यक है।

प्रशस्य है अनाग्रह की चेतना

दृष्टिकोण को उदात्त बनाने वाला मुख्य तत्त्व है - अनाग्रह। आग्रह अवरोध पैदा करता है। अनाग्रह की चेतना मार्ग को निर्बाध बनाती है। साध्वीप्रमुखाजी की अनाग्रहवृत्ति प्रशस्य है। स्वीकृत संकल्पों और नियमों के प्रति आपकी दृढ़ता जहां अनुमोदनीय है, वहीं गुरु-इंगित के प्रति सर्वात्मना समर्पण का भाव उल्लेखनीय और प्रेरणादायी है।

प्रसंग पौष कृष्णा दशमी का है। आप दशमी का उपवास और एकादशी को बेला करना चाहती थी। एकादशी के दिन विहार बहुत लम्बा (लगभग 16 किमी) होने से अनेक साध्वियों ने बेला न करने का निवेदन किया। आपने कहा — मेरा वर्षों का क्रम बना हुआ है, मैं इसे तोडना नहीं चाहती। दशमी के दिन साध्वियां गुरुदर्शनार्थ गईं। साध्वीप्रमुखाजी के न चाहने पर भी गुरुदेव को सारी बात निवेदित कर दी। आचार्यवर ने फरमाया — साध्वीप्रमुखाजी पौष दशमी का उपवास और एकादशी के दिन बेला करना चाहती हैं, लेकिन हमारा चिंतन कुछ भिन्न है। पौष कृष्णा दशमी का दिन भगवान पार्श्व की जन्म जयन्ती से जुड़ा हुआ है। जन्मदिन पर प्रायः उपवास नहीं किया जाता। महाप्रयाण दिन या निर्वाण दिन पर ही प्रायः उपवास किया जाता है। एकादशी का दिन आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण का दिन है। इसलिए एकादशी का उपवास करना ही उपयुक्त लगता है। आचार्यप्रवर के फरमाने के बाद साध्वीप्रमुखाजी ने यही कहा — जैसे गुरुदेव की मर्जी। न कोई तर्क और न प्रार्थना की पुनरावृत्ति। यह है आपकी अनाग्रहशीलता का उदाहरण।

इसी प्रकार का एक प्रसंग फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी के दिन का है। सुबह गुरुवंदना के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया — गुरुदेव! आज महाश्रमणीजी के महाप्रयाण का दिन है, कृपा कर मुझे बेले का प्रत्याख्यान कराएं। आचार्यप्रवर ने कहा — आपके वैसे भी बहुत कार्य रहते हैं, अनेक प्रकार की जिम्मेवारियां भी हैं, अतः बेले की बात नहीं जचती। साध्वीप्रमुखाजी ने कहा — गुरुदेव! मैं सारे कार्य करते हुए, अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए भी बेला कर सकती हूं। मुझे कोई कठिनाई नहीं है, आप कृपा कराएं। आचार्यवर ने फरमाया — बेला कराने की इच्छा नहीं है, विगय वर्जन किया जा सकता है। आपने आचार्यवर के इंगित को शिरोधार्य करते हुए यही कहा — जैसे गुरुदेव की मर्जी।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में सहज विनम्रता है। बड़ों से बात करते समय आपके हाथ हमेशा जुड़े रहते हैं। छोटों की अच्छी बात पर आपकी प्रसन्नता और प्रमोद भावना स्वतः व्यक्त हो जाती है। जहां विनम्रता और ग्रहणशीलता होती है, वहां आग्रह कभी भी अपना आसन नहीं जमा सकता। अनाग्रही व्यक्ति की सोच सकारात्मक होती है। साध्वीप्रमुखाश्री जी की सोच में सकारात्मक उच्चता रहती है।

'दृष्टिप्रसादो ग्रहमोचनेन' की उक्ति आपके जीवन व्यवहारों में पूर्णतया चरितार्थ होती है। देहप्रसाद, मनःप्रसाद और दृष्टिप्रसाद की इस पुण्य त्रिपथगा में अभिस्नात आपश्री के जीवन का हर क्षण प्रसादमय हो। आपके द्वारा हमें सदा प्रेरणा का प्रसाद प्राप्त होता रहे, ताकि मंजिल का मार्ग निर्बाध बन सके।

मनोनयन दिवस पर शतशः बधाइयां, मंगलकामनाएं।

संघमणि आज बधाएँ हम

● साध्वी शीलयशा ●
● साध्वी सलिलयशा ●

मंगलमय ये घड़ियां आई, कण-कण में खुशहाली छाई।
शासन भाग्य लता लहराई, मानस कलि-कलि विकसाई।
भावों का उपहार सजाएं हम, संघ मणि आज बधाएँ हम।।

1. वैशाखी चौदस को प्रभु ने नव इतिहास रचाया,
महाश्रमण की कृपा सवाई, प्रमुखा पद बक्साया।
अम्बर अमृत रस बरसावे, दशों दिशाएं गीत सुनावे।
श्रद्धा दीप जलाएं हम, स्वागत थाल सजाएं हम।।

2. ममता मयी मां पाकर तुमको, प्रफुल्लित मानस मेरा,
हर्षोल्लास के क्षण लाया, चयन दिवस यह तेरा।
चयन पर मन मयूर नाचै, छम-छम यश घुँघुरु अै बाजै।
अन्तर ज्योति जलाएं हम, उपशम आभा को पाएं हम।।

3. चित्त समाधि पूर्ण व्यवस्था, जागरूकता हरदम,
विलक्षण प्रतिभा, सहज सरलता, सहिष्णुता प्रबलतम।
आपका मिला हमें आधार, नाज हमें है बारम्बार।
इंगित पर बढ़ते ही जाए हम, नत मस्तक शीश झुकाएं हम।।

4. चिरायु शतायु रहो निरामय, तहेदिल यही कामना,
हर दिन नव इतिहास रचे, हमारी यही भावना।
चयन दिवस सदा मनाएं, श्रम से गण बगिया महकाएं।
संघमणि आज बधाएँ हम, भावों का उपहार सजाएं हम।।

लय - नीले घोड़े रा

भैक्षव शासन में छाई है खुशियां बे अन्दाज

● साध्वी कारुण्यप्रभा ●

भैक्षव शासन में छाई है खुशियां बे अन्दाज।
साध्वीप्रमुखा जी का चयन दिवस है आज।।

1. गौरवशाली नन्दन वन सा गण पाया,
भिक्षु चमन का गौरव दुनिया ने गाया।
महातपस्वी महाश्रमण प्रभु भैक्षव गण सरताज।।

2. वदना नंदन चरणों में संयम पाया,
महाप्रज्ञ दृष्टि पा जीवन सरसाया।
गुरु कृपा का ऐसा सुन्दर नजर न आया राज।

3. श्री सरदारशहर भूमि का रंग खिला,
नवमी साध्वीप्रमुखा का उपहार मिला।
नियोजिका विश्रुतविभा के सिर पर रखा है ताज।।

4. चन्देरी भूमि जागी पुण्याई,
विश्रुत, लाडां, कनकप्रभा गण में छाई।
श्री तुलसी की जन्म धरा पर हम सबको है नाज।।

5. अप्रमत्तता तव जीवन की दिल भाई,
सुघड़ लेखनी, प्रवचन शैली है छाई।
रहो निरामय सदा आज यह अन्तरमन आवाज।

लय - बार-बार तोये

नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चतुर्थ चयन दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

'रहस्यवाद' के आलोक में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

● साध्वी तन्मयप्रभा ●

आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तेज़ी से बढ़ती प्रगति का युग है। शिक्षा, स्वास्थ्य, भूगोल, संचार और दैनिक कार्यों को सुगम बनाने में विज्ञान की भूमिका असाधारण रही है। विज्ञान ने कई रहस्यों से पर्दा उठाया है, लेकिन अभी भी कुछ तत्व हैं, जो वैज्ञानिक विवेचनाओं से परे हैं, जैसे- ब्लैक होल, बरमूडा ट्रायएंगल, यूएफ़ओ-एलियन्स और साइबेरियन सिंकहोल्स आदि। इन तत्वों का रहस्य अब तक पूरी तरह से उद्घाटित नहीं हुआ है। ये रहस्य यह संकेत करते हैं कि हमारी बुद्धि और इंद्रियों की अपनी सीमाएं हैं और समस्त ज्ञान को केवल तर्क या अनुभव से जान पाना संभव नहीं है। इस संदर्भ में रहस्यवाद का उद्भव हुआ, जो दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा है।

रहस्यवाद एक आध्यात्मिक यात्रा भी है, जो साधक को आत्मा से परमात्मा की ओर उन्मुख करती है। रहस्यवाद की दिशा में अग्रसर एक साधक की आध्यात्मिक उच्चता को कुछ लक्षणों के आधार पर पहचाना जा सकता है, जैसे- अहं विलय, नियम निष्ठा, आत्मलीनता, समर्पण, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना आदि। ये लक्षण अध्यात्म की दिशा में प्रस्थित विरल व्यक्तियों में ही प्राप्त होते हैं। इन विरल व्यक्तित्वों में एक व्यक्तित्त्व है- साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा। साध्वीप्रमुखाजी का संपूर्ण जीवन रहस्यवाद की एक ऐसी यात्रा है, जिसमें चेतन अहंकार के आवरण को हटाकर परम चेतना से तादात्म्य स्थापित करता है। आपके जीवन में इस रहस्यवाद का प्रभाव और उसकी उपस्थिति को कुछ मानक बिंदुओं के आधार पर स्पष्टतया अनुभव किया जा सकता है। वे मानक बिंदु इस प्रकार हैं-

नियम निष्ठा

परमतत्त्व की प्राप्ति के लिए कुछ नियमों का पालन अत्यंत आवश्यक है। स्वीकृत नियमों में अडिग रहने वाला व्यक्ति ही इच्छित मंजिल को प्राप्त करने में सफल बन सकता है। सांसारिक उपलब्धियों को हासिल करने में भी नियमों का पालन आवश्यक है, तो आत्मतत्त्व की प्राप्ति में नियमों का दृढ़ता से पालन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

सीमित समयावधि में आबद्ध नियमों का पालन किसी सीमा तक आसान हो सकता है, किंतु आजीवन नियमों के स्वीकरण एवं पालन में कठिनाइयों का ज्यादा सामना करना पड़ सकता है। मन को चंचल अश्व की उपमा दी गई है। जिस प्रकार अविनीत या चंचल अश्व को नियंत्रित करना कठिन है, उसी प्रकार मन पर दीर्घकाल तक लगाम कसना कुछ कठिन हो सकता है, किन्तु जहां संकल्प शक्ति में दृढता होती है, वहां मन को नियंत्रित करना कठिन नहीं होता। आचार्य महाप्रज्ञजी ने संकल्पशक्ति के विषय में एक श्लोक लिखा है-

संकल्पशक्तिः प्रबला मम स्यात्,
एकाग्रता मे शिखरं प्रयाता।
विनिर्मलं चित्तमिदं विधातुं,
चित्ते प्रसिद्धे सकलं प्रसिद्धम्।।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में यह श्लोक चरितार्थ हो रहा है। आपके चित्त की प्रसन्नता का आधार - संकल्प शक्ति की प्रबलता है। आप वज्रसंकल्पी व्यक्तित्व की धनी हैं। वर्ष 2003, सूरत चातुर्मास का प्रसंग है। आपके पेट की ओपन सर्जरी हुई थी। डॉक्टर ने तीन महिनों के लिए लम्बे समय तक बैठने का निषेध किया और पेट में झटके न लगे इसका विशेष ध्यान रखने को कहा। जैन साध्वाचार के अनुसार संवत्सरी से पूर्व केश लोच का विधान है। चातुर्मास के प्रारंभिक दिनों में ऑपरेशन हुआ अतः संवत्सरी निकट थी। उस समय तक आपको ऑपरेशन कराये हुए कुछ ही दिन हुए थे। ऐसी परिस्थिति में भी आपने यह नहीं सोचा कि मैं लोच नहीं कराऊँ। बेड पर लेटे-लेटे ही लोच करवा लिया। यह है आपकी नियमों के प्रति निष्ठा। डॉक्टर द्वारा बताए गए नियमों का पालन करते हुए साधुत्व के नियमों का पालन भी यथावत् किया। आपने मानो सबके सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर दिया।

वर्तमान युग में यंगस्टर्स का एक स्वर सुनाई दे रहा है- 'नियम तो तोड़ने के लिए बनाए जाते हैं।' किंतु युवावस्था से ही आपका आदर्श रहा- 'नियम जीवन की उन्नति के लिए बनाए जाते हैं।' वैराग्य प्रस्फुरण के समय से ही आप नियमों के प्रति जागरूक रही। एक बार जो संकल्प किया, उसके लिए सदा कटिबद्ध रहे- 3.30 बजे जागरण, आगम आदि ग्रंथों का स्वाध्याय। संयम ग्रहण के पश्चात् - गुरू दर्शन के बाद आहार ग्रहण करना, आहार के मध्य न बोलना। यदि बोलना पड़े तो खड़े होकर बोलना, कैसी भी परिस्थिति हो, प्रतिक्रमण के मध्य न बोलना।

इस पंक्ति को लिखते हुए मुझे विगत महावीर जयंती की शाम याद आ गई। आपश्री के उपवास था। उस शाम गुरुवर सहित सभी गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों का विहार था। विहार के पश्चात् साध्वियां आपके सान्निध्य में प्रतिक्रमण कर रही थीं। गर्मी की अधिकता के कारण आपका जी-घबराने लगा। प्रतिक्रमण के मध्य वमन हुआ। इस निमित्त वहां उपस्थित साध्वियों में चर्चा होने लगी। कुछ कह रहे गर्मी अधिक है, किसी को लगा विहार लम्बा था। आपने संकेत से मौन की प्रेरणा प्रदान करते हुए प्रतिक्रमण चालू रखने को कहा। वमन होने के बाद आपको स्वस्थता का अनुभव हुआ और आप पुनः प्रतिक्रमण में लग गए। इस दौरान आपने मौन व्रत का पालन किया। उस स्थिति में भी आप अपने नियम के प्रति पूर्ण जागरूक थे।

हित-चिंतन

रहस्यवाद की यात्रा में यात्रायित साधक का एक लक्षण है- हित-चिंतन। हित-चिंतन के दो पहलू हैं- 1. स्वहित चिंतन, 2. परहित चिंतन। प्रायः सभी दर्शनों में परहित चिंतन को प्रशस्य माना गया है।

परोपकार पुण्याय, पापाय परपीडनम्।
अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनद्वयम्।।

अधिकांश प्राणी स्वहित चिंतन करते हैं। परहित चिंतन करने वाले कोई-कोई व्यक्ति ही होते हैं। साध्वीप्रमुखाश्रीजी स्वहित चिंतन करते हुए परहित चिंतन को भी गौण नहीं करते हैं।

नानी चिराई गाँव में आचार्यवर का अहिंसा यात्रा के दौरान दो बार पादार्पण हुआ। उस गांव में साध्वियों की ठहरने की व्यवस्था दो स्थानों पर थी। एक स्थान आचार्यप्रवर के नजदीक था, दूसरा 800-900 मीटर दूर स्थित था।

जब प्रथम बार पादार्पण हुआ तब साध्वीप्रमुखाजी गुरुदेव के पास वाले स्थान पर ठहरे, किंतु जब पुनः पधारे तब आपने गुरुदेव के पास वाले स्थान पर ठहरने की मनाही कर दी। साध्वियों ने निवेदन किया कि जब आप दोपहर में 2 बजे आचार्यप्रवर की सेवा में पधारेंगे तो बहुत तेज धूप होगी। आप कृपाकर उसी स्थान पर विराज जाएं। साध्वीप्रमुखाजी ने फरमाया— पिछली बार मेरे से दूर रहने में साध्वियों को कठिनाई हुई। इस बार मैं वहां नहीं ठहरूंगी। धूप की कोई खास बात नहीं है। साध्वियों को साता पंहुचनी चाहिए। आपने परहिताय स्वयं कष्ट का मार्ग स्वीकार किया।

आत्मतत्त्व या परमतत्त्व की प्राप्ति के लिए परहित चिंतन सदा अपेक्षित है। आप स्वयं के विश्राम के समय, स्वाध्याय-अध्ययन के समय को गौण कर परहिताय प्रयत्नरत रहते हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक या संगठनात्मक संस्थाओं को समय प्रदान करवाते हैं। शोकाकुल परिवारों को भी संभालते हैं। महिला मण्डल, कन्या मण्डल के विकास के बारे में भी चिंतन कराते हैं। इस प्रकार विभिन्न माध्यमों द्वारा आप परहित चिंतन में संलग्न रहते हैं।

समर्पण

आत्मतत्त्व या परमत्तत्त्व की प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण बिंदु है- समर्पण। समर्पण को दूसरे शब्दों में अहं-विलय भी कह सकते हैं। अहं को विलीन किये बिना समर्पण संभव नहीं हो सकता है। आचार्यों का छोटी चीज के लिए इंगित हो या बड़ी चीज के लिए, वह आपके लिए सर्वोपरि होता है। आचार्यों की दृष्टि के अनुसार कार्य करने में तत्पर रहते हैं। इसके साथ ही औरों को भी गुरु-दृष्टि के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं।

तेरापंथ के आचार्यों द्वारा साध्वीप्रमुखाओं को कुछ अधिकार प्राप्त हैं, किंतु साध्वीप्रमुखाओं को इस बात का अहं कभी छू नहीं पाया। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के मुख से हम अनेक बार यह सुनते हैं- जैसे गुरुदेव की दृष्टि होगी, वैसे ही हम कार्य कर लेंगे। यहां तक की कोई अपने घर पर शय्यातर का अवसर प्रदान करने का निवेदन करता है तब भी आपके मुख से यही सुनने को मिलता है- गुरुदेव जैसा फरमाएंगे, हम वैसा ही कर लेंगे। शासन माता को हमने देखा। उन्हें जब साध्वियां किसी नए विषय के बारे में जिज्ञासा करती तो वे प्रायः यही फरमाते कि गुरुदेव से पूछकर बताउंगी। यही बात हम वर्तमान में साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन में देखते हैं। कोई भी नई प्रवृत्ति शुरू करने से पूर्व गुरुदेव से मार्गदर्शन लेते हैं। आपका हर कार्य गुरुदेव की दृष्टि के अनुरूप होता है। गुरु इंगित की आराधना आपका प्रमुख ध्येय रहता है। यह समर्पण और जागरूकता साध्वी समाज के लिए अनुकरणीय है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन केवल तप और संयम का नहीं, बल्कि एक रहस्यवादी साधक का जीवन है। आप 'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न' इस अनुभूति को जीते हैं। आपका जीवन इस बात का प्रमाण है कि रहस्यवाद कोई दार्शनिक कल्पना मात्र नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक गहन और अनुशासित शैली है। आपकी जीवन-यात्रा वर्तमान युग के जिज्ञासु साधकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। नियम-निष्ठा, संकल्प-शक्ति और समर्पण — ये सभी रहस्यवाद की अनिवार्य शर्तें हैं, जिन्हें आपने अपने जीवन में साकार किया है।

वर्तमान युग के अनुरूप और आत्मतत्त्व के साक्षात्कार के लिए सदैव प्रयत्नशील साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन तेरापंथ साध्वी समाज के लिए एक निदर्शन है।

चयन दिवस के अवसर पर हम साध्वीप्रमुखाश्री जी से यही आशीर्वाद चाहते हैं कि हम भी आत्मतत्त्व की खोज में उनके गुणों को अपनाकर अपनी लक्षित मंजिल प्राप्त कर सकें।

तेरी साधना रंग ला रही

● साध्वी पावनप्रभा ●

श्रमणी गण सरताज, तेरी शासना मन भा रही।
शासना मन भा रही, तेरी साधना रंग ला रही।।

1. मोदी कुल में आ गई तुम लाडनूं की लाडली।
चंदेरी की चाँदनी बन सबके दिल पर छा रही ।।

2. गुरुवर तुलसी महाप्रज्ञ की महर नजर तुमने पाई ।
महाश्रमण अनुशासना में हीरकणी बन लुभा रही।।

3. ज्ञान दर्शन चरण तप में रात दिन रहती मगन।
स्वाध्याय की प्रियता तुम्हारी सबके मन को भा रही।।

4. नवमी साध्वीप्रमुखा की हम करते हैं अभिवन्दना।
श्रद्धा का स्वस्तिक ले 'पावन' मधुरी तान सुना रही।।

लय - सांवली सूरत में मोहन

परम पद आराधिका हो

● साध्वी शुभप्रभा ●

परम पद आराधिका हो
सत्य पथ संधायिका हो
स्वसिद्धि संचालिका हो
गुरुचरण समुपासिका हो।।

आत्मयज्ञ की वेदिका हो
कर्म-शत्रु विभेदिका हो
मंत्र पदों की सेविका हो
महाज्योति की वर्तिका हो।।

वीतराग की भूमिका हो
साधक मन की चूलिका हो
उपशम रसमय कूपिका हो
आर-पार की पूलिका हो।।

श्रमणी गण की नायिका हो
चित्त समाधि प्रदायिका हो
प्रबन्धन विधायिका हो
साधना में सहायिका हो।।

समणी वर्ग नियोजिका हो
आधी दुनिया प्रबोधिका हो
चमक-दमक विरोधिका हो
शूल-कांटे संशोधिका हो।।

गुरु-शिष्या संवादिका हो
चरण-कमल प्रसादिका हो
महाप्रज्ञ संपादिका हो
नव मूल्यों की प्रवादिका हो।।

ज्ञान चक्षु उद्घाटिका हो
सम्यग दर्शन साधिका हो
सदाचरण की पालिका हो
तपोभूमि की कारिका हो।।

महाश्रमण की चयनिका हो
स्वयं स्वयं की मालिका हो
ऊर्ध्वलक्षी अट्टालिका हो
शुभ भावों की संग्राहिका हो।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

साध्वीश्री संचितयशाजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

पल में विलीन, सेवा में तल्लीन : साध्वी संचितयशा

● साध्वी शकुंतला कुमारी ●

आज शब्द निशब्द हैं, जुबां बेज़ुबां है। यह अचानक कैसे हो गया? एक चमकता, मुस्कुराता ज़मीं का तारा चुपके से आसमां में समा गया। हमने सपने में भी नहीं सोचा था कि साध्वी संचितयशा जी इतनी जल्दी इस दुनिया से विदा हो जाएंगी। क्यों? कहाँ? कैसे? यह अनहोनी कैसे हो गई? सच में, नियति को टाला नहीं जा सकता।

'फूल मुरझा जाता है, पर खुशबू रह जाती है; व्यक्ति चला जाता है, पर स्मृतियाँ रह जाती हैं।' इस धरा पर अनेक आत्माएँ जन्म लेती हैं और समय के साथ काल-कवलित हो जाती हैं। परंतु जन्म उन्हीं का सफल होता है, जिनका व्यक्तित्व सदैव दूसरों के जीवन को नई दिशा व सही राह दिखाता है। ऐसी ही संयम जीवन जीने वाली, रत्नत्रय की आराधिका थीं— साध्वी संचितयशा जी।

साध्वी संचितयशा जी 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी के साथ लगभग 25 वर्षों तक तन का कपड़ा बनकर रहीं। उन्होंने उनकी खूब सेवा की तथा चित्त समाधि पहुंचाई। वह एक प्रतिभासम्पन्न तथा तत्वज्ञ साध्वी थीं।

हमारे ग्रुप की ऑल-राउंडर साध्वी थीं। मुझे उनके साथ लगभग 26 वर्षों तक रहने का सुअवसर मिला। उन्होंने मुझे प्रत्येक कार्य में अपना अनुपम तथा अतुलनीय सहयोग प्रदान किया। उनका तन दुर्बल, पर आत्मबल अत्यंत मजबूत था। वे बड़ों के प्रति समर्पित तथा छोटी साध्वियों को वात्सल्य देती थीं। उनका गुरुदेव के प्रति आत्म-समर्पण भाव गज़ब का था। जैसे सूर्यमुखी पुष्प का डायरेक्शन सदैव सूर्य की ओर रहता है, वैसे ही साध्वी संचितयशा जी गुरुदेव के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित साध्वी थीं। हर समय सेवा में तल्लीन रहने वाली साध्वी, पल में ही विलीन हो जाएंगी, ऐसा कभी नहीं सोचा था।

इस भिक्षु शासन में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के कर-कमलों से योगक्षेम वर्ष में साध्वीश्री ने संयम रत्न को प्राप्त किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी तथा आचार्य श्री महाश्रमण जी की कुशल अनुशासना में संयम की साधना करती रहीं। उन्हें तीन आचार्यों तथा दो साध्वी प्रमुखाओं की विशेष कृपा प्राप्त रही।

सरलमना साध्वी श्री संचितयशा जी के बारे में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने स्मृति सभा में फरमाया —

'साध्वी संचितयशा जी की आत्मा प्रगति करे। देवगति में सीमंधर स्वामी आदि तीर्थंकरों के दर्शन हो सकें तो प्रयास करें। वहाँ से प्रेरणा संदेश प्राप्त करके अगले भव में मनुष्य जन्म को प्राप्त कर, अपनी साधना करने का लक्ष्य रखें तथा मोक्षश्री का वरण करें।'

गुरुदेव के मुखारविंद से निकले वचन, साध्वी संचितयशा जी के लिए वरदान बन गए। मैं, साध्वी जागृतप्रभा जी तथा साध्वी रक्षितयशा जी, अपने प्रभो के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

कहते हैं — सूर्य की शोभा किरणों से, जल की शोभा तृप्ति से, चाँद की शोभा शीतलता से होती है; वैसे ही साधक की शोभा संथारे से होती है। साध्वी संचितयशा जी की भी अंतिम इच्छा यही थी। जब उन्हें अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया, तभी से लेकर अंतिम सातवें दिन तक, यही शब्द दोहराती रहीं — 'मुझे भवन ले जाओ, संथारा कराओ।'अंतिम सात दिनों में असाता वेदनीय कर्मों का भयंकर उदय था। उनकी वेदना को देखने वालों का रोम-रोम कांप उठता, आँखों से आँसू बहने लगते। लेकिन उनकी समता, सहिष्णुता को सौ बार प्रणाम, नमन। गजब का साहस।

उनकी संथारे की भावना को देखते हुए उन्हें अस्पताल से गोयल फ्लैट, विलेपार्ले लाया गया। गुरुदेव की कृपा से मुझे पिछले वर्ष अग्रगण्य 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी और इस वर्ष साध्वी संचितयशा जी को संथारा पचखाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

साध्वी संचितयशा जी ने तेरापंथ शासन की गरिमा पर सुयश का कलश चढ़ाया है। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की शासना में नव इतिहास का सृजन किया तथा धर्मसंघ में अपना नाम रोशन कर दिया।

अंत में, मैं भावपूर्ण श्रद्धांजलि के साथ हार्दिक मंगलकामना करती हूँ कि साध्वी संचितयशा जी की पुण्यात्मा शीघ्र ही मोक्षश्री का वरण करे।

"तप-त्याग की रोशनी गुम हो गई कहाँ,
जहाँ में यादें हैं आपकी, मगर आप हैं कहाँ ?"

नव इतिहास रचाया है

● साध्वी रक्षितयशा ●

साध्वी संचित की जयकार, करके संथारा स्वीकार।
गण पर कलश चढ़ाया है, नव इतिहास रचाया है।।

1. डालचंद जी किरण देवी की कुक्षी है उजाली।
चंडालिया कुल की थी लाडेसर सबको लगती प्यारी।
चढ़ती वय में संयम पाया, सरला से संचित नाम सुहाया।
जीवन धन्य बनाया है।।

2. गुरु तुलसी के कर कमलों से संयमश्री को पाया।
गुरु महाप्रज्ञ की प्रज्ञा से ज्ञान का दीप जलाया।
आत्म भाव से भावित बनना, निज-पर का कल्याण करना।
ऐसा लक्ष्य बनाया है।।

3. शासनश्री सती सोमलता जी को सेवा खूब सुहाई।
साध्वी शकुंतला, जागृत, रक्षित सहयोगी मनभाई।
ग्रुप की सुपर स्टार साध्वी, आलराउंडर भी थी साध्वी।
सबके दिल को लुभाया है।।

4. इतनी जल्दी चले गये क्यों सबका साथ छोड़कर।
आंखों में आंसू नहीं थमते दिल में दर्द देकर।
देवलोक से फोन आया, सीमंधर का दर्शन पाया।
गुरु का वचन सवाया है।।

5. बड़े भाग्य से भैक्षव शासन, नंदन वन है पाया।
महायशस्वी महाश्रमण का, सिर पर हाथ सवाया।
तेयुप की सेवा है भारी, महिला मंडल है आभारी।।
अद्भुद दृश्य दिखाया है।। विलेपार्ले में ठाठ लगाया है।।

लय- नीले घोड़े रा असवार

डॉक्टर, टीचर और कल्याणमित्र साध्वी संचितयशाजी

● साध्वी जागृतप्रभा ●

हिन्दी साहित्य में तीन शब्द आते हैं— प्राचीन, नवीन, समीचीन।

1. प्राचीन – जिस वृक्ष में मूल सुरक्षित है लेकिन पत्ते, फल, फूल सब गायब हो गए हैं।

2. नवीन – वृक्ष में पत्ते, फल, फूल सब हैं, पर मूल से संबंध टूट गया है। ज्यादा समय तक नहीं टिकता।

3. समीचीन – जिस वृक्ष में मूल, शाखा, प्रशाखा, फल-फूल सब हैं।

साध्वीश्री संचितयशाजी का जीवन न प्राचीन था, न नवीन था, पर समीचीन था। उनके जीवन में निश्चय व व्यवहार का समन्वय था। जितनी वे आत्मार्थी थीं, उतनी ही व्यवहारिक भी। आप अपने व्यवहार के ज़रिए जहाँ कहीं, जिस किसी के साथ रहीं, उनकी बनकर रहीं। सहनशीलता, समता व सजगता ये तीन गुण ऐसे थे उनके जीवन में, जिनकी वजह से अध्यात्म व व्यवहार का बैलेंस बना रहा।

सहनशीलता – सहे बिना शुद्धि नहीं, शुद्धि बिना सिद्धि नहीं। साध्वी संचितयशाजी एक सहनशील साध्वी थीं। अंतिम समय में घोर वेदना को भी समभाव से सहन किया था।

समता – 'समया धम्म मुदाहरे मुणी — इस आगम सूक्ति को उन्होंने अपने जीवन में उतारा था। वे समत्व की धनी थीं। उनका व्यवहार सबके प्रति सम था। बड़ों की सेवा और छोटों के प्रति स्नेह व वात्सल्य का भाव रखती थीं।

3. सजगता – आप अपने प्रति पूर्ण सजग थीं। 'काले कालं समायरे' भगवान महावीर की वाणी के अनुसार उन्होंने समय पर सही निर्णय लेकर चौविहार संथारा लिया। यह उनकी सजगता का परिणाम है।

साध्वी संचितयशाजी का व्यक्तित्व निराला था। आपकी वाणी सरल, शांत और स्पष्ट थी। आपका मन प्रसन्न और पाप-भीरु था और आपका शरीर हमेशा सबका सहयोग करने को तत्पर रहता था।

वर्षों से आपके साथ रहते हुए मैंने अनुभव किया कि आप मेरी साइकोलॉजिस्ट थीं। मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं रहती—आप मेरे मन को भली-भांति पढ़ लेती थीं और उसके अनुरूप समाधान भी देती थीं।

आप मेरी तथा हमारे वर्ग की डॉक्टर भी थीं। जब कभी किसी को जरूरत पड़ती, तब डॉक्टर के रूप में किसे कितना 'एम.जी.' टेबलेट आवश्यक है, उसी रूप में उपचार करती थीं। अर्थात पूरी श्रद्धा व आस्था के साथ स्वामीजी की गीतिकाएं, मंत्र का जाप, ध्यान, कायोत्सर्ग, स्वाध्याय से हमें समाधि पहुंचाती थीं।

आप मेरी टीचर भी थीं। समय-समय पर पढ़ने के लिए मुझे मोटिवेट करना, ज्ञान प्रदान करना, सिखाना आदि।

आप मेरी कल्याणमित्र भी थीं— कल्याणमित्रा बनकर मुझे संयम व साधना में आगे बढ़ाया।

'एगो में सासओ अप्पा' — को ध्यान में रखते हुए अंतिम मनोरथ पूर्ण करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव की कृपा से चौविहार संथारा स्वीकार किया।

पूज्य गुरुदेव ने अंतिम आराधना स्वरूप आलोचना करवाई, और उन्होंने गुरु-दर्शन की भावना रखी। तब गुरुदेव ने कृपा बरसाते हुए फरमाया कि—

"अब तुम सीमंधर भगवान के साथ तार जोड़ दो।"

गुरुदेव तुलसी की वे पंक्तियाँ — 'संचित पुण्याई को नहीं आरपार हो' — इसका दर्शन हुआ। आप मुमुक्षु सरला से साध्वी संचितयशा बनीं। अपने वैराग्य, संयम में पुण्याई को संचित किया। तत्त्वज्ञान, स्वाध्याय से ज्ञान को संचित किया। सेवाभावना, विनम्रता, सहजता आदि गुणों को संचित कर अपना नाम सार्थक किया और अपना काम सिद्ध किया।

मैं साध्वी संचितयशा जी की आत्मा के प्रति शुभकामना व मंगलकामना करती हूँ कि उनकी आत्मा उत्तरोत्तर प्रगति करती हुई अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करे।

'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्‌गार

समता, विनम्रता की मूरत : 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी

● साध्वी अणिमाश्री ●

जीवन में निष्ठा के साथ सतत गतिशील रहने वाली सक्रिय चेतना का नाम है- साध्वी मदनश्री। जीवन के हर मोड़ को सहजता के साथ पार कर देने वाली पवित्रात्मा का नाम है- साध्वी मदनश्री। स्वस्थ, सुखी ओर आनन्दमय जीवन जीने वाली हकीकत का नाम है- साध्वी मदनश्री। समता और विनम्रता के युगपत् योग का नाम है- साध्वी मदनश्री। जिनकी विशिष्ट सेवावृत्ति ने परिपार्श्व में रहने वाली हम साध्वियों में सेवा के संस्कारो को संपुष्ट किया।

परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी की कृपा से साध्वी रायकुमारी जी के साथ सहवर्ती के रूप में रहते हुए उनके साथ लगभग 24 वर्ष साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे जीवन निर्माण में साध्वी रायकुमारी जी, साध्वी कानकुमारी जी के साथ-साथ साध्वी मदनश्रीजी का भी निरन्तर आत्मीय सहयोग प्राप्त हुआ। अतीत के वे प्रेरक पल आज भी प्रेरणा का पथ प्रशस्त करते हैं। रत्नाधिक होने के बावजूद उनका वात्सल्य प्राण-प्राण में पुलकन भर देता था। वे प्रायः हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहती थीं। उनकी प्रमोद-भावना, गुण ग्राहकता अद्भुत थी।

अपनी जन्मभूमि में स्थिरवासी बनकर अपनी संयम यात्रा को चौविहार अनशन पूर्वक सम्पन्न कर धन्य बन गई। संसारपक्षीय भाणजी साध्वी मंजुयशाजी के उनकी अंतिम सेवा, सहयोग एवं अनशन के प्रत्याख्यान के साथ-साथ अंतिम श्वास की साक्षी बनने का गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी कृपा से अनूठा योग प्राप्त हुआ। यह आह्लाद का विषय है। उस पल में साथ जीने का सौभाग्य किसी-किसी को उपलब्ध होता है। दिवंगत आत्मा निरन्तर वीतराग पथ पर अग्रसर रहे, मंगलकामना।

जीवन सौम्य विधायक हो

● 'शासनश्री' साध्वी धनश्री ●
● साध्वी शीलयशा ●

शासनश्री साध्वी मदन श्रीजी, जीवन सौम्य विधायक हो।
शान्त स्वभावी सरलमना, निर्मल संयम उद्बोधक हो।।

सरदारशहर नौ की दीक्षा, तुलसी गुरूवर मुखकमल ग्रही,
साध्वी श्री रायकंवरजी की अनुगामिनी, संयम बाट बही।
संघ समार्पित जीवन थांरों, ओ प्रेरणा दायक हो।।

जीवन जीयो थे एक ग्रुप में, बणकर आंख्यां रो तारो,
मिलन सारिता सात्विक स्नेह, पूरित हो जीवन थांरो।
ओर निर्जरा नीति रो, बोध पाठ प्रदायक हो।।

पंचायत नहीं थांरी म्हारी, जो भुलायो काम करयो,
व्यवहार कुशलता सहनशीलता, मानस राख्यो हरयो भरयो।
वसुमती री सेवा महानिर्जरा, थे ही रहया सहायक हो।।

समाधि केन्द्र में काम करयो, नीति विशुद्ध सदा थांरी,
जन्म भूमि बीदासर, और प्रयाण भूमि बन गई थांरी।
संयम यात्रा का लाभ पूर्ण ले, मुक्ति के लायक हो।।
साध्वी मंजुयशा जी सेवा में, सिद्ध काम मन भावक हो।।

लय - तुलसी है प्राणा स्यूं प्यारो

प्राप्त करो भव थाह

● मुनि कमलकुमार ●

जयवंता हमको मिला, जग में तेरापंथ,
नंदनवन के तुल्य है, महिमा का क्या अंत?

'शासनश्री' से अलंकृत, साध्वी मदन सुनाम,
बीदासर की लाडली, स्मृति कर रहे तमाम।।

संलेखन के साथ में, संथारा स्वीकार,
कलात्मक जीवन सफल, कर गई जय-जयकार।।

तुलसी गुरुमुख कमल से, दीक्षित हुई सहर्ष,
सजग रही पल-पल सतत, दिखा दिया आदर्श।।

महाप्रज्ञ-महाश्रमण की, आज्ञा के अनुसार,
विहरण करके अंत में, कर गई बेड़ा पार।।

मंजुयशा सतीवर सजग, सेवा में हर याम,
वैशाख कृष्ण एकादशी, सिद्ध किया निज काम।।

क्रमशः बढ़ती ही रहो, प्राप्त करो भव थाह,
कमल-नमि के हृदय की, यही एक है चाह।।

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

अहमदगढ़ (पंजाब)

भगवान महावीर का 2624वाँ जन्मकल्याणक दिवस पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में अहिंसा रैली का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त जैन समाज ने नारे और गीतों के माध्यम से सहभागिता दी। यह रैली नगर के मुख्य मार्गों से होकर तेरापंथ भवन पहुंची, जहाँ यह एक सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। दूसरे चरण में साध्वी कनकरेखा जी ने भगवान महावीर के जीवन एवं सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए कहा - चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला की रत्नकुक्षि से एक दिव्य बालक का जन्म हुआ – जिसे 'महावीर' नाम मिला। वे क्रांतिकारी महापुरुष थे, जिन्होंने शांतिपूर्ण मार्ग पर चलते हुए सत्य, अपरिग्रह और अनेकांत जैसे सिद्धांतों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर का जीवन वैराग्य, साधना और आत्मकल्याण की पराकाष्ठा का प्रतीक है। उनका संदेश आज भी घर, समाज, देश और विश्व के लिए पथप्रदर्शक है। साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभाजी एवं साध्वी हेमंतप्रभा जी ने नवीन शैली में 'महावीर अमृतवाणी' प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर पूर्वाध्यक्ष बलदेव जैन एवं राकेश जैन ने स्वागत भाषण देते हुए सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। महिला मंडल द्वारा सुमधुर संगान के साथ मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ युवती मंडल तथा स्थानकवासी युवती मंडल ने सरगम के स्वर में संगीतमय प्रस्तुति देकर उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कन्यामंडल और ज्ञानशाला के बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियां दी। लुधियाना सभा के पूर्व अध्यक्ष अभय सिंह जैन, पंजाब प्रांतीय ज्ञानशाला से मंजु सिंघी, मीनाक्षी जैन, अलका जैन ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गुणप्रेक्षा जी ने किया।

जयपुर

बहुश्रुत 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्म कल्याण समारोह आध्यात्मिक उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुआ। भिक्षु साधना केन्द्र समिति में तेरापंथी सभा जयपुर द्वारा समायोजित कार्यक्रम का मंगलाचरण निधि बोथरा ने महावीर अष्टकम के संगान से किया। साध्वी मधुलताजी ने आज के कार्यक्रम की महत्ता को उजागर करते हुए 'लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते' का सामूहिक जप करवाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्री जी ने कहा - जिन युग पुरूषों ने अपनी साधना, तपस्या, गहन चिंतन और अध्यात्म दर्शन से मानवीय संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित किया, उनमें भगवान महावीर का विशिष्ट स्थान है। महावीर का अहिंसा दर्शन, अपरिग्रह दर्शन और अनेकांत दर्शन मानव मनीषा की उज्जवल धरोहर है। भगवान महावीर की शिक्षाओं को सदा प्रासंगिक बताते हुए साध्वीश्री ने कहा कि भगवान महावीर अहिंसा और विश्व शान्ति के पुरोधा थे। वे महान पर्यावरण विज्ञानी थे। इच्छाओं के अलपीकरण, संयम और सुविधावादी दृष्टकोण का परिवर्तन कर मनुष्य पर्यावरण की सुरक्षा कर सकता है। इस अवसर पर साध्वी मधुलेखा जी, साध्वी समितिप्रभा जी ने महावीर दर्शन को समझने की प्रेरणा दी।

'कुंडलपुर गौरवशाली पुण्यशलिनी वैशाली' गीत की मधुर स्वर लहरी के साथ साध्वीवृंद ने अपनी आस्था की अभिव्यक्ति दी। अभातेममं सदस्य नीरू पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। युवक परिषद से श्रेयांस कोठारी और अभिषेक भंसाली ने परिसंवाद के माध्यम से आराध्य की अभिवंदना की। ज्ञानशाला के ज्ञानर्थियों ने सामूहिक कलात्मक प्रस्तुति दी। सी स्कीम महिला मंडल की बहन श्रद्धा बोरड, नन्हा संगायक, प्रतीक लोढ़ा ने अपनी सुमधुर स्वरलहरी में उपस्थित परिषद का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संयोजन सी स्कीम महिला मंडल की अध्यक्ष प्रज्ञा सुराणा ने किया।

रात्रीकालीन भक्ति गीत संध्या में साध्वीवृंद ओर गायक कलाकारों ने भगवान महावीर और आचार्यश्री भिक्षु के भक्ति गीतों को सुमधुर स्वरों में प्रस्तुति देकर वातावरण को श्रद्धाभिभूत कर दिया।

बुरहानपुर

मुनि अर्हत कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में बुरहानपुर सकल जैन समाज द्वारा 2624वां महावीर जन्म कल्याणक दिवस आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कहा कि जन्म और जाति से कोई महान नहीं होता, अपितु कर्म से महान होता है। भगवान महावीर ने ऐसे अनेक सिद्धांत दिए जो हमारी आत्मा और जीवन दोनों को सर्वतोपरी रूप से पुष्ट करते हैं। भगवान महावीर ने 3 'S' का सिद्धांत दिया। पहला S है सैटिस्फैक्शन – अर्थात् जीवन में संतोष को स्वीकार करें। दूसरा S है साइलेंस – जब भी जीवन में विवाद या तनाव की स्थिति उत्पन्न हो, तब मौन को अपनाएं। तीसरा S है सॉल्यूशन – जहाँ समाधान होता है, वहाँ व्यवधान नहीं होता। मुनिश्री ने आगे कहा, 'हम भगवान को तो मानते हैं, पर भगवान की नहीं मानते। जब तक हम भगवान की नहीं मानेंगे, तब तक हमारे जीवन में मुक्ति संभव नहीं है। 3 S के सिद्धांत को जीवन में आत्मसात करें, तभी भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस सार्थक हो सकेगा।' मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर के जीवन से संवर और निर्जरा की प्रेरणा लेनी चाहिए। मुनि जयदीप कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

रायपुर

तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर के माध्यम से रायपुर सकल जैन समाज द्वारा आयोजित भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव समिति - 2025 अंतर्गत आयोजित 16 दिवसीय आयोजन में 3 टेस्ट निःशुल्क प्रदान किए। सोलह दिनों में थाइरोइड, ब्लड शुगर और सीबीसी का कुल 513 लोगों द्वारा लाभ लिया गया। स्टाफ के साथ निर्मल गांधी, निकुंज साचला, वीरेंद्र डागा का विशेष सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

जल संरक्षण कार्यशाला का भव्य आयोजन

कोयम्बतूर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार, तेरापंथ महिला मंडल कोयम्बतूर द्वारा 'एक बूंदः एक सागरः जल संरक्षण' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। मंडल की बहनों — रुपकला भंडारी, गुण बोहरा, निर्मला कांकरिया, सुरेखा सेमलानी और कुसुम बुच्चा — ने बहुत ही सुंदर व सरल शब्दों में समझाया कि शरीर अन्न के बिना कुछ दिन तो रह सकता है, परंतु पानी के बिना जीवन असंभव है। उन्होंने बताया कि जल संरक्षण में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। साथ ही यह भी समझाया कि जैन धर्म के अनुसार यदि हम संयमपूर्वक जल का उपयोग करें, तो अपकाय जीवों की हिंसा से भी बच सकते हैं।

सभी बहनों ने जल के संयमित उपयोग का संकल्प लिया। धन्यवाद ज्ञापन मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अपराजिता नाहटा ने किया।

महाश्रमण आर्ट गैलरी का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेयुप निर्देशानुसार युवा दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में महाश्रमण आर्ट गैलरी में कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई। तेयुप राजाजीनगर द्वारा विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त ग्यारह कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिनमें से पांच कलाकृतियों का चयन सभा अध्यक्ष द्वारा किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम करते रहने से समाज के अन्दर छिपी हुई कला बाहर आती हे और सबको अपना टैलेंट दिखाने का मौका मिलता है। सभा अध्यक्ष ने कलाकृतियों को सराहते हुए सभी को धन्यवाद दिया। ममता राजेश बोहरा इलेक्ट्रॉनिक सिटी, चिराग जैन राजाजीनगर, भव्या दसानी हनुमंतनगर, हार्दिक दक राजाजीनगर, रिद्धि गांधी बसवेश्वरनगर की कलाकृतियों का चयन हुआ। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, मंत्री जयंतीलाल गांधी एवं कलाकृति सदस्यों की उपस्थिति रही।

पृष्ठ 1 का शेष

आत्मा के कल्याण के...

वर्धापना का क्रम

साध्वीवर्याश्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि आचार्य प्रवर पांव-पांव चलने वाले महासूर्य हैं। आप प्रबल पुरुषार्थी और पुण्यशाली हैं। आपको लींबड़ी संप्रदाय के आचार्यजी ने 'पुण्य सम्राट' अलंकरण से उपमित किया था। आपकी श्रम-निष्ठा, तपो-निष्ठा महान है। श्रम से आप मोती निपजाते हुए धर्मसंघ की श्रीवृद्धि करवा रहे हैं। आप व्यक्तित्व निर्माण की कार्यशाला हैं।

पूज्यवर के मंगल प्रवचन से पूर्व तेरापंथ समाज-पालनपुर ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि चिन्मयकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि संयमकुमारजी, मुनि केशीकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। मुनि राजकुमारजी, मुनि नम्रकुमारजी ने गीत का संगान किया। साध्वी विशालयशाजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी ख्यातयशाजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रवीणप्रभाजी एवं साध्वी आर्षप्रभाजी ने अपनी संयुक्त प्रस्तुति दी। समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

आचार्यश्री के संसारपक्षीय भाई श्रीचंद दूगड़, महेन्द्र दूगड़ व रत्नी बाई और मैत्री बोथरा ने अपनी प्रस्तुति दी। दूगड़ परिवार की ओर से गीत को प्रस्तुति दी गई। बालिका आद्या बच्छावत, पालनपुर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। मुमुक्षु भाइयों ने भी अपनी प्रस्तुति के द्वारा आचार्यश्री को वर्धापित किया। 'दादी मां एक स्मृति पुस्तक' नवनीत मूथा आदि द्वारा पूज्यप्रवर को निवेदित की गई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

मेक योर मार्क कार्यशाला में सीखे जीवनोपयोगी सूत्र

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत 'मेक योर मार्क' का आयोजन अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया की अध्यक्षता मे तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद द्वारा तेरापंथ भवन शाहीबाग में किया गया। सामूहिक नवकार मंत्र के मंत्रोच्चार के पश्चात विजय गीत का संगान किशोर मंडल टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया और सभी का स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष पंकज घीया ने सभी का स्वागत करते हुए मेक योर मार्क कार्यशाला का उनके जीवन में हुए लाभ को को बताते हुए सभी का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में किशोरों की विशेष सहभागिता देखते हुए उन्होंने किशोर मंडल का विशेष उत्साहवर्धन किया। मुख्य प्रशिक्षक मनीषा सेठिया और अखिल मारु ने तीन अलग-अलग सत्र में प्रतिभागियों को अपने जीवन के लक्ष्य निर्धारण, आत्मविश्वास, सतत अभ्यास, समय पाबंदता, निर्णय लेने की क्षमता का विकास, कम्युनिकेशन, टीम वर्क, मोटिवेशन, नेतृत्व क्षमता के विकास, व्यक्तिगत छाप छोड़ने हेतु अनेक बिंदुओं को विस्तार से समझाते हुए दैनिक उपयोगी सूत्र और गुर सिखाये।

कार्यक्रम के समापन में सभी प्रतिभागियों ने प्रण लिया कि वह आगामी जीवन में बताए गए समाधान पर अमल करते हुए अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन करेंगे और साथ ही अपनी प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए रचनात्मक कार्य करेंगे। तेयुप अहमदाबाद प्रबंध मंडल द्वारा मुख्य प्रशिक्षक मनीषा सेठिया और अखिल मारु का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में 26 लोगों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजक अभिषेक बुरड, विशाल पिंचा, तनुष मांडोत, प्रतीक जैन, मनन बागरेचा और कुश चोपड़ा का अथक श्रम रहा। इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य गण, परिषद् पूर्व अध्यक्ष, कार्यकारिणी एवं सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक बुरड ने किया। सभी का आभार मंत्री जय छाजेड़ ने किया।

श्री उत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशन में एवं तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के तत्वावधान में 'श्री उत्सव – एक कदम स्वावलंबन की ओर' का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई।

समाजसेवी प्रभात सेठिया एवं संगीता सेठिया द्वारा 'श्री उत्सव' का विधिवत उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में समाजसेवी अमृत कुमार जैन, सम्माननीय अतिथि के रूप में विजय सिंह एवं नीलम पारख, तथा विशेष अतिथि के रूप में किरण देवी कोठारी व अशोक हीरावत की गरिमामयी उपस्थिति रही।

महिला मंडल की अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी आगंतुकों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, टी.पी.एफ. अध्यक्ष वीरेन्द्र घोषल, अणुव्रत समिति से मंत्री रीटा सुराणा तथा जैन विश्व भारती के सह-मंत्री नवीन बैंगानी ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई एवं 'श्री उत्सव' की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

महिला मंडल की मंत्री सुशीला मोदी ने बताया कि इस श्री उत्सव प्रदर्शनी में हैदराबाद के अलावा कोलकाता, जयपुर, बीदासर, जोधपुर, बीकानेर आदि स्थानों से विविध स्टॉल्स ने भाग लिया।

प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण 'डिज़ायर ज्वेल्स, कोलकाता' रहा। दोनों ही दिन प्रदर्शनी में खरीदारी के लिए ग्राहकों की भारी भीड़ देखने को मिली।

सभी अतिथियों को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया गया। 'श्री उत्सव' को सफल बनाने में संयोजिकाओं का उल्लेखनीय श्रम एवं सहयोग रहा। उद्घाटन सत्र का कुशल संचालन सुशीला मोदी एवं मीनाक्षी सुराणा ने किया, तथा आभार ज्ञापन रुबी दुगड़ द्वारा प्रस्तुत किया गया।

ज्ञानशाला वार्षिक उत्सव समारोह सम्पन्न

वाशी।

ज्ञानशाला के वार्षिक उत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र से हुआ।

प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण अनीता सियाल ने दिया। ध्रुवी कावड़िया व दितिषा बाफना ने नृत्य प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष पंकज चंडालिया, तेयुप अध्यक्ष अरविंद खाटेड़, महिला मंडल सहमंत्री विजेता भसाली सहित अन्य अतिथियों ने अपने विचार रखे। मुख्य प्रशिक्षिका पिंकी कोठारी ने वर्ष 2024 की गतिविधियों की प्रस्तुति दी, वहीं वर्ष 2025 के लिए नम्रता खाटेड़ को नई मुख्य प्रशिक्षिका मनोनीत किया गया। श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु ज्ञानार्थियों को सम्मानित किया गया। वर्ष 2024 की बेस्ट प्रशिक्षिका के रूप में संगीता गोखरू व बेस्ट फैमिली के रूप में संचेती परिवार को सम्मानित किया गया। साध्वी कंचनरेखा जी एवं साध्वी मंजूरेखा जी ने प्रशिक्षकों व ज्ञानार्थियों को आशीर्वचन प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन सेजल सियाल एवं सोनिया सिंघवी ने किया। आयोजन को सफल बनाने में सभी प्रशिक्षिकाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

'प्रेक्षा प्रवाह - शक्ति एवं शांति की ओर' कार्यशाला का आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं द्वारा निर्देशित 'प्रेक्षा प्रवाहः शक्ति एवं शांति की ओर' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला, उत्तर हावड़ा द्वारा किया गया। इसमें उत्तर हावड़ा, साउथ कलकत्ता, साउथ हावड़ा, टांलीगंज, बेहाला और बाली-बेलर क्षेत्रों के तेरापंथ महिला मंडलों की सहभागिता रही। मुनिश्री ने उपस्थित बहनों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये तथा उद्बोधन में प्रेक्षाध्यान और डिप्रेशन विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा, 'प्रेक्षाध्यान - तनाव मुक्ति की उत्तम प्रक्रिया है।

कायोत्सर्ग का अर्थ है शरीर के प्रति आसक्ति को छोड़ना

प्रेक्षाध्यान का एक महत्त्वपूर्ण चरण है - कायोत्सर्ग । कायोत्सर्ग आभ्यन्तर तप है, ध्यान की पृष्ठभूमि है, अनासक्ति की साधना है। कायोत्सर्ग का अर्थ है शरीर के प्रति आसक्ति को छोड़ना।

मुनि श्री ने आगे कहा, 'आज का युग तनाव का अवसाद का युग है। तनाव तीन प्रकार का होता है। शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक तनाव। तनाव से नाना प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं, सोचने की क्षमता कम हो जाती है, स्मरणशक्ति कमजोर हो जाती है। शरीर, मन और भाव पर भी बुरा असर पड़ता है। इसलिए व्यक्ति तनावमुक्ति का जीवन जीएं।'

कार्यशाला का शुभारंभ सभी शाखा मंडलों की बहिनों द्वारा मंडल गीत के सामूहिक संगान से हुआ। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा महिला मंडल की उपाध्यक्ष सीमा बैद ने दिया। मनोचिकित्सक डा. अभय डे ने 'डिप्रेशन के प्रभाव' विषय पर वक्तव्य दिया।

प्रेक्षा ट्रेनर अंजु सिंघी ने योगाभ्यास एवं माधुरी बाबेल ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। आभार एवं संचालन मंत्री रेणु समदरिया ने किया।

एस्पायर आर्क इवेंट का भव्य आयोजन

उत्तर हावड़ा/ साउथ हावड़ा।

तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा एस्पायर आर्क नामक कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हावड़ा के तीन किशोर मंडल – उत्तर हावड़ा, दक्षिण हावड़ा और लिलुआ के किशोरों ने सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम में मुंबई से ब्लू ब्रिगेड सदस्य तन्मय झवेरी और कोलकाता से ब्लू ब्रिगेड सदस्य अर्पित मालू की उपस्थिति रही।

तन्मय झवेरी ने अपने अनुभवों के माध्यम से किशोरों को जागरूक करते हुए बताया कि किशोर सिर्फ भविष्य के नागरिक के साथ-साथ वर्तमान में कार्य निर्माता है। हर छोटा से छोटा प्रयास कार्य में प्रगति लेकर आता है। उन्होंने उदाहरणों और कहानियों के माध्यम से यह संदेश दिया कि सामाजिक सेवा हर किशोर के जीवन का उद्देश्य होना चाहिए।

सहवक्ता अर्पित मालू ने भी किशोरों से सीधा संवाद करते हुए उन्हें अपनी अंदर की क्षमताओं को पहचानने के साथ कार्य प्रणाली से समाज को नई दिशा प्रदान करने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि किशोर अपने कौशल, समय और ऊर्जा को समाज के उत्थान में लगा सकते हैं।

तीनों किशोर मंडल ने साल भर में उनके द्वारा किये गये कार्यक्रम को प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया। कार्यकर्म के दौरान किशोरों के अंदर टीम भावना और एकता बढ़ाने के लिए एक प्रतियोगिता भी रखी गई जिसमें सभी किशोरो को 5 टीमों में बांटा गया और उन्हें अलग-अलग विषय पर प्रस्तुति देने को कहा गया।

कार्यक्रम में अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य संदीप डागा, सदस्य नमन जम्मड, तेरापंथ युवक परिषद लिलुआ के अध्यक्ष अमित बांठिया, मंत्री जयन्त घोड़ावत, साउथ हावड़ा अध्यक्ष गगन दीप बैद, उत्तर हावड़ा परिषद के मंत्री विनीत भंसाली, तेयुप सदस्य, किशोर मंडल के प्रभारी, सहप्रभारी एवं किशोर साथी उपस्थित थे।

जूनियर सी पी एस कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा आयोजित कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग के अंतर्गत देश की प्रथम जूनियर सी पी एस कार्यशाला का आयोजन सेठ चम्पालाल झणकारबाई डुंगरवाल, जैन भवन, चंद्रा लेआउट में हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुई। तेयुप टीम ने विजय गीत का संगान किया।

अभातेयुप के सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने अपने स्वागत वक्तव्य में बचपन से वक्तव्य कला के विकास हेतु नए आयाम को आज की जरूरत बताते हुए सहभागियों को पूरा लाभ उठाने की अपील की।

शाखा प्रभारी रोहित कोठारी ने अभातेयुप के अनेक आयामों को विजयनगर से शुरुवात होने की परंपरा का निर्वहन हेतु परिषद् परिवार को बधाई दी।

राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने सी पी एस जूनियर के विशिष्ट प्रथम आयोजन को ऐतिहासिक बताते हुए इस प्रशिक्षण को जीवन विकास एवं आत्म विश्वास बढ़ाने का माध्यम बताया।

इस अवसर पर सीपीएस मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत, ट्रेनर डिम्पल सियाल, परिषद् पदाधिकारी सहित परिषद् परिवार की उपस्थिति रही ।

तनाव को पालने की जगह टालने का प्रयास करें

नेपानगर, मध्यप्रदेश।

मुनि अर्हत कुमार जी की ठाणा 3 के सान्निध्य में नेपानगर में नेपा मिल में 'तनाव : कारण – निवारण' सेमिनार का आयोजन किया गया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि, 'आज का युग एक विषम समस्या से जूझ रहा है। यह समस्या 8 साल से लेकर 80 साल तक के सभी व्यक्तियों में पाई जाती है उस समस्या को जन भाषा में तनाव कहा जाता है। हम खुद ही समस्या के जनक हैं और हम स्वयं ही समस्या के समाधायक भी हैं। यह तनाव हमें मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से तोड़ता जा रहा है। समस्या आना पार्ट ऑफ लाइफ है और तनाव लिए बिना हंसते-हंसते उस समस्या का समाधान ढूंढ लेना आर्ट ऑफ लाइफ है। तनाव को पालने की जगह टालने का प्रयास करें।'

मुनिश्री ने तनाव के निवारण के विषय में आगे कहा, 'तनाव के निवारण का प्रथम चरण है -'सकारात्मक चिंतन'। सकारात्मक चिंतन हमारे जीवन में रचनात्मक सृजन करता है हमेशा अपनी सोच को पॉजिटिव ऊर्जा से एक्टिवेट करते रहें। तनाव निवारण का दूसरा उपाय है 'वर्तमान में जीना'। व्यक्ति या तो भूतकाल की चिंता में जीता है या भविष्य की कल्पनाओं में जीता है। वर्तमान में रहना मानो मानव ने सीखा ही नहीं है।'

मुनि भरत कुमार जी और मुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किये।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
12 मई - 18 मई, 2025

सुसंस्कार और सद्गुण होते हैं जीवन की बड़ी संपत्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

पालनपुर।
5 मई, 2025

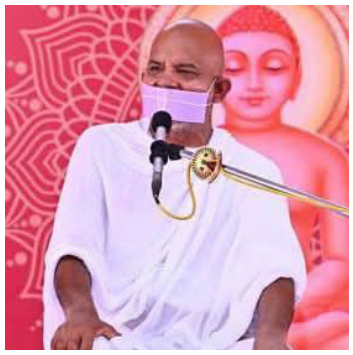

तेरापंथ धर्म संघ के महानायक आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 8 किमी का विहार कर पालनपुर के एमबी कर्णावट हाईस्कूल परिसर में त्रिदिवसीय प्रवास हेतु पधारे। महामनीषी आचार्य प्रवर ने आर्हत वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में सद्गुणों का विकास होना चाहिए। हमारे जीवन की एक बड़ी संपत्ति सुसंस्कार और सद्गुण होते हैं। सद्गुणों का मूल उपादान हमारे भीतर हो सकता है। बच्चा कोरा कागज नहीं होता है; वह पीछे से भी संस्कार लेकर आता है, और वे संस्कार उभर सकते हैं। आत्मा का शाश्वत अस्तित्व है, और जन्म-जन्मांतर की परंपरा चलती रहती है।

सब साधु बने या न बने, पर उनमें संस्कारों का खजाना हो सकता है। संस्कार अच्छे-बुरे हो सकते हैं। गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी पीछे से संस्कार लेकर आए थे। संस्कार उभरे और छोटी उम्र में ही साधु बन गए। पढ़ने से भी अच्छे संस्कार आ सकते हैं। अच्छे संस्कारों में रहने से अच्छे संस्कार प्राप्त हो सकते हैं। आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु पिछले जन्मों से संस्कार और ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम लेकर आए थे। शिक्षा संस्थानों में भी अच्छे संस्कार दिए जाते रहते हैं। जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संस्कारों का विकास हो सकता है।

शिक्षण संस्थानों से बौद्धिक संस्कारों के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी देने का प्रयास हो। बचपन में अच्छे संस्कार आ जाएँ और जीवन भर टिके रहें तो वह श्रेष्ठ हो सकता है। विद्यार्थियों में अनावश्यक घमंड न आए। विद्या विनय से शोभती है। ज्ञान का उपयोग करें, दुरुपयोग न करें। शक्ति व धन का भी घमंड न हो। निरहंकारिता भी एक अच्छा संस्कार है। अहंकार सुरापान के समान है। ज्ञान का दिखावा न हो, उपलब्धि हो सकती है, पर उसमें प्रदर्शन न हो। शक्ति हो, तो भी क्षमा रखें। गृहस्थ दान देते हैं, पर उसमें नाम की भावना न हो। हम सभी में अच्छे संस्कार रहें तो आत्मा श्रेष्ठ हो सकती है। आगे की गति भी उत्तम हो सकती है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यवर का 2025 का चातुर्मास तो अहमदाबाद में है, परंतु आचार्यवर गुजरात के हर क्षेत्र में प्रवास करवा रहे हैं। समुद्र का अवगाहन करने से रत्न मिलते हैं, वैसे ही महान व्यक्तियों का सान्निध्य भी व्यक्ति को महान बना देता है। संस्कार दो प्रकार के होते हैं – नैसर्गिक, जो बच्चा साथ में लेकर आता है, और अर्जित, जो जीवन में प्राप्त होते हैं। गुरु हमें अच्छे संस्कार देने वाले होते हैं। बच्चे को अच्छे संस्कार देने वाली माँ होती है।

हमारे भविष्य को अच्छा बनाने के लिए बच्चों को अच्छे संस्कार दें। बच्चों को आधुनिक बनाने के साथ-साथ आध्यात्मिक भी बनाएं। पूज्यवर के स्वागत में स्वागताध्यक्ष रसिकभाई मोदी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुभाष खटेड, कार्यक्रम संयोजक किरीटभाई परीख, महिला मंडल अध्यक्ष सरोज चोरड़िया, कन्या मंडल से किंजल मोदी, विनोदभाई परीख, पालनपुर के विधायक अनिकेतभाई, कर्णावट स्कूल के प्रमुख ईश्वरभाई पटेल ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं।

समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

प्रतिक्रमण को अपनाइए, मन दर्पण स्वच्छ बनाइए

भीलवाड़ा।

तेरापंथ भवन भीलवाड़ा में तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में 'प्रतिक्रमण एक्सप्रेस – रूपांतरण शिल्पशाला' कार्यक्रम का आयोजन डॉ. साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

डॉ. साध्वी परमयशा जी ने अपने उद्बोधन में प्रतिक्रमण की बहुआयामी उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा - प्रतिक्रमण हमारा कल्याण मित्र है, यह व्यक्तित्व निर्माण, मानसिक पोषण, पारिवारिक एकता, सामाजिक सुदृढ़ीकरण और आत्मा की जागृति का संपूर्ण स्रोत है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रतिक्रमण केवल जैन धर्म का ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को दिया गया एक आध्यात्मिक उपहार है। यह जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, मनोबल और आत्मिक शुद्धि का संचार करता है। प्रतिक्रमण के द्वारा हम इहलोक और परलोक—दोनों का कल्याण कर सकते हैं।

साध्वीश्री ने समझाया कि प्रतिक्रमण शुद्ध, स्पष्ट, लयबद्ध उच्चारण के साथ करना चाहिए। यह सूर्योदय-सूर्यास्त से 48 मिनट पहले या बाद में किया जा सकता है। प्रतिदिन, पक्खी, चौमासा अथवा संवत्सरी पक्खी के दिन प्रतिक्रमण करना चाहिए। साध्वीश्री ने कहा कि सम्यक्त्व की रक्षा हेतु प्रतिक्रमण आवश्यक है।

उन्होंने विशेष रूप से खमत खामणा की विनम्रता का उल्लेख करते हुए कहा कि विनय करने वाला कभी छोटा नहीं होता, अतः क्षमायाचना को दैनिक जीवन का अंग बनाएं। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा मंगलाचरण संगान से हुआ। मंडल अध्यक्ष मीना बाबेल ने प्रतिक्रमण के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृन्द ने प्राकृत, संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी – चार भाषाओं में मधुर गीतों के माध्यम से प्रतिक्रमण से आत्मगुलशन को महकाने का आह्वान किया।

महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत 'प्रतिक्रमण एक्सप्रेस' रूपांतरण शिल्पशाला कार्यक्रम में 13 स्टेशनों के माध्यम से श्रावक के 12 व्रतों को बहुत रोचक और सजीव ढंग से प्रस्तुत किया गया, जिससे उपस्थित श्रद्धालुओं को प्रतिक्रमण की गहराई और उसका जीवन से संबंध समझने में सरलता हुई। कार्यक्रम का संचालन रेणु चोरड़िया तथा आभार प्रदर्शन प्रेक्षा मेहता द्वारा किया गया।

बोलती किताब

तब होता है ध्यान का जन्म

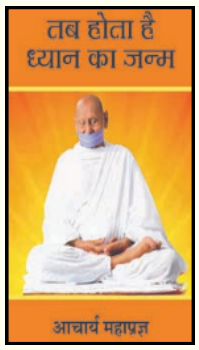

निर्भर है प्रयोग पर - हमारे आचार्यों ने आत्मा के स्वरूप का विशद वर्णन किया है । आत्मा शुद्ध होती है, शरीर मुक्त होता है उसमें अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति , अनंत आनंद होते हैं, वह अमूर्त है, शरीर-प्रमाण है । आदि-आदि । बहुत विस्तार के साथ आत्मा की चर्चा हुई है किंतु उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण होना उस चर्चा पर निर्भर नहीं है । वह प्रयोग पर निर्भर है । यदि प्रयोग के द्वारा हमारी ऐसी भूमिका बन जाए, जिसमें शरीर भी साथ दे, मन और भावना भी साथ दे, कोई बाधा न आए, उस स्थिति में हम ध्यान करने बैठें और एक दूसरी स्थिति में चले जाएं तो ध्येय का साक्षात्कार संभव बन सकता है ।

जरूरी है सूक्ष्म दृष्टि का विकास - सूक्ष्म पर्यायों को जानने के लिए सूक्ष्म दृष्टि का विकास जरूरी है । और वह होता है विचारानुगत ध्यान या पर्याय ध्यान से । जब हम पर्याय का ध्यान करेंगे तब वह विकसित होगा । यदि हम एक दिन के बच्चे से लेकर, जब वह एक वर्ष का हो जाए तब तक प्रतिदिन उसके पर्यायों का सूक्ष्मता से अध्ययन करे तो व्यक्ति अच्छा ध्यानी बन जाए । उसे फिर प्रेक्षाध्यान के शिविर में भाग लेने की जरूरत नहीं है, पदार्थ का आलंबन लेने की आवश्यकता नहीं है ।

समय प्रौढ़ता का - ध्यान के लिए हमने एक आलंबन लिया, पर वह हमारे साथ ज्यादा रह नहीं पाएगा । उसके साथ दोस्ती नहीं होती । यदि दोस्ती होती तो लंबे समय तक टिक जाता। वह आया ओर चला गया। चित्त की एक अवस्था है यातायात। ध्यान किया, एक मिनट या आधी मिनट ध्यान रुका और फिर चला गया । फिर आया, फिर चला गया । जब तक यह यातायात की स्थिति रहती है तब तक ध्यान का बचपन रहता है ।

आत्म-साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा- यह प्रेक्षा गीत का ध्रुवपद है । आत्मा का साक्षात्कार बहुत कठिन लगता है, पर असंभव नहीं है । प्रश्न हो सकता है– आत्मा अमूर्त है, इंद्रियां एवं मन मूर्त को जानते हैं, तो साक्षात्कार कैसे संभव होगा ? हमारे पास जानने के जो साधन हैं, वे न मूर्त को जानने वाले हैं, न अमूर्त को ।इन चर्म चक्षुओं से मूर्त परमाणु का साक्षात्कार नहीं हो सकता,सूक्ष्म स्कंध को भी नहीं हो सकता । अनंत प्रदेशी स्कंध हैं, अनंत परमाणु इकट्ठे हुए हैं, किंतु परिणति सूक्ष्म है । हम इन आंखों से उन्हें नहीं देख पाते ।

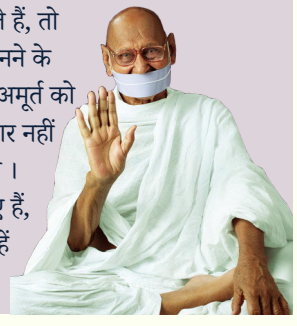

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

वर्षीतप अभिनंदन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में 'वर्षीतप अभिनंदन कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि निर्जरा का एक प्रकार तपस्या भी है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी चेतना को निर्मलता से अभिस्नात कर सकता है। साध्वीश्री ने वर्षीतप करने वालों के साधना-संवर्धन हेतु प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने गीतिका के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया।

अभिनंदन के स्वर में सम्मिलित होते हुए उत्साहित तेरापंथ महिला मंडल ने भी गीतिका के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, तेयुप मंत्री देवीचंद तातेड़, सरिता बैद और शशि टांटिया ने पृथक-पृथक गीतिकाओं का संगान कर तपस्वियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में तपस्वी भाई-बहनों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

कुशल संचालन महावीर चौपड़ा ने किया तथा आभार ज्ञापन कैलाश तातेड़ द्वारा प्रस्तुत किया गया।

मोक्ष का आधार है कषाय मुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

अक्षय तृतीया कार्यक्रम सहित चार दिवसीय प्रवास हेतु पूज्यवर ने किया डीसा में मंगल प्रवेश

डीसा।
29 अप्रैल, 2025

तीर्थंकर के प्रतिनिधि, मैत्री के महान प्रेरणा स्रोत आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ अक्षय तृतीया महोत्सव के आयोजन हेतु चार दिवसीय प्रवास पर डीसा नगर पधारे। विशाल अक्षय समवसरण में तप के अक्षय कोष आचार्यप्रवर ने कहा— प्रश्न है—'मुक्ति कब मिलेगी?' उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, 'मोक्ष का मूल आधार कषाय मुक्ति है। केवल दिगंबर या श्वेतांबर कहलाने से मुक्ति नहीं मिलती। जब व्यक्ति क्रोध, मान, माया और लोभ—इन चारों कषायों से मुक्त हो जाता है, तभी मुक्ति सुनिश्चित है। क्षीण मोह की प्राप्ति ही मोक्ष का द्वार खोलती है।'

पूज्यवर ने क्रोध को मनुष्य का शत्रु बताते हुए कहा कि गुस्सा सामाजिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अहितकारी है। यह एक नाग के समान है। क्षमा कर देना, विशेषतः सामर्थ्य होते हुए भी, महानता का चिह्न है। 'मार सके मारे नहीं ताको नाम मर्द', 'क्षमी वीरस्य भूषणम्।' पूज्यवर ने आगे कहा कि संवत्सरी क्षमा पर्व है—यह मैत्री और क्षमा का प्रतीक है। हर व्यक्ति को चाहिए कि वह जीवन में शांति बनाए रखे और गुडमैन बने।

आज हमारा अक्षय तृतीया समारोह के संदर्भ में डीसा में आना हुआ है। यह समारोह भगवान ऋषभ से जुड़ा हुआ है। आज अक्षय तृतीया का पूर्व का दिन है। वे क्षीण मोह बन गए और उस जीवन के बाद मोक्ष को भी प्राप्त हो गए। कितने-कितने गृहस्थ वर्षीतप करने वाले होते हैं। यह वर्षीतप एकदम अखण्ड हो जाए तो बहुत अच्छी तपस्या हो सकती है। वर्षीतप के साथ धर्म, ध्यान साधना, जप आदि का क्रम चलता है तो यह विभूषित हो सकता है। अक्षय तृतीया के संदर्भ में आज हमने डीसा में प्रवेश किया है। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी डीसा में पधारे थे। लगभग 23 वर्षों के बाद इस बार हमारा आना हुआ है। यहां के सभी लोगों में धार्मिक भावना पुष्ट होती रहे।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने होने उद्बोधन में कहा, 'परम पूज्य आचार्यप्रवर केवल अक्षय तृतीया मनाने नहीं, बल्कि लोककल्याण हेतु पधारे हैं। वे जैन एकता की बात करते हैं। आप केवल जैनाचार्य नहीं, बल्कि जनाचार्य भी हैं, और जनाचार्य ही सबके हित की बात कर सकते हैं। जैन बने न बने, पर गुडमैन अवश्य बनें।'

पूज्यवर के स्वागत में अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, डीसा के स्वागताध्यक्ष फूलचंद बाफणा, सभाध्यक्ष प्रकाशचंद बाफणा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नवीन श्रीश्रीमाल, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष प्रेमदेवी बोरदिया आदि ने अपनी भावनाएं प्रकट कीं। तेरापंथ समाज-डीसा ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद-डीसा ने भी गीत का संगान किया।

दरबार समाज के अध्यक्ष बहादुरसिंह बाघेला, बीके न्यूज चैनल के मगनलाल माली, जैन जागृति सेंटर के अध्यक्ष मीठालाल जीरावला ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ऋजुता नहीं है तो शुद्धि के आगे है प्रश्नचिह्न : आचार्यश्री महाश्रमण

महावीर धाम, चडोतर।
4 मई, 2025

संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी चडोतर के महावीर धाम परिसर में पधारे। अमृत देशना प्रदान कराते हुए अमृत पुरुष ने फरमाया कि साधना के क्षेत्र में ऋजुता का महत्वपूर्ण स्थान है।

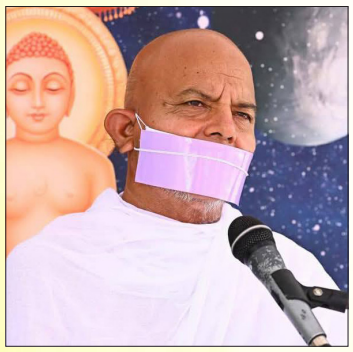

प्रश्न किया गया कि मोक्ष-निर्वाण को कौन प्राप्त कर सकता है ? कहा गया कि जिसके जीवन में धर्म होता है, वह निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। फिर प्रश्न किया गया कि धर्म किस आदमी के जीवन में ठहरता है?

शास्त्र में कहा गया है कि शुद्धता जहां है, वहां धर्म ठहरता है। फिर प्रश्न किया गया कि शुद्धि किसकी होती है? आगम में कहा गया है कि जो ऋजुभूत है, उसकी शुद्धि होती है।

छठे गुणस्थान में भी गलती हो सकती है। सरलता से जो गुरु को अपनी गलती बता देता है, तो शोधि हो सकती है। गुरु से गलती मत छिपाओ। ऋजुता नहीं है तो शुद्धि के आगे प्रश्नचिह्न है। बच्चे जैसी सरलता आ जाए। 'भूल छिपाना पाप, बात बताओ साफ। यहां बचोगे पर नहीं, आगे होगी माफ।' सरलता में भी धर्म है। झूठे और छलकपटी का विश्वास नहीं किया जा सकता। बात कहें, तो साफ कहें। सरलता से स्वीकार कर लें। हम अपने जीवन में ऋजुता पर ध्यान दें, सरलता रहे। छल-कपट न हो। भरोसा हट जाना बड़ी क्षति है। माया अविश्वास बढ़ाती है, सरलता से भरोसा बढ़ सकता है। छल-कपट से एक बार काम को सुलझाया जा सकता है, पर पाप का घड़ा एक दिन फूटता है। गृहस्थ जीवन में छल-कपट से बचें। सरलता रहे, तो आत्मा का कल्याण हो सकता है। पूज्यवर के स्वागत में महावीर धाम से नवीन मोदी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चारित्र की ऊंचाई को साधें : आचार्यश्री महाश्रमण

आखोल।
28 अप्रैल, 2025

भरत क्षेत्र में भी महाविदेह का आभास कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 9 किमी का विहार कर आखोल स्थित श्री महाविदेह तीर्थधाम में पधारे। तीर्थंकर वाणी का रसास्वादन कराते हुए परम पुरुष ने फरमाया कि संसार में साधु होते हैं—कोई वेषधारी, कोई नामधारी, तो कोई भाव-निक्षेप से साधु होता है। यदि साधु है पर साधुता नहीं है, तो वह केवल नामधारी है। भाव-निक्षेप वाला साधु वह है, जिसमें छठे गुणस्थान से लेकर चतुर्दश गुणस्थान तक की स्थिति संभव है। भाव-निक्षेप से युक्त साधुता ही कल्याणकारी होती है। भाव-निक्षेप अर्थात जो वस्तुतः साधु है, मूलतः वही सच्चा साधु है। माध्यम कोई भी हो सकता है—हम भाषा के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं, चाहे वह नाम हो, शब्द हो, रूप हो या स्थापना।

पूज्यवर ने कहा, 'आज हम महाविदेह तीर्थ में आए हैं। यह नाम-स्थापना-निक्षेप हो सकता है। हमारे मुख से बार-बार सीमंधर स्वामी का नाम आता है। वर्तमान में अर्हत सीमंधर स्वामी विद्यमान हैं। प्रश्न यह उठता है कि उनका नाम बार-बार क्यों आता है?

क्या सीमंधर स्वामी कोई पुरुष दानी हैं? नहीं, बल्कि वह हमारे लिए सबसे निकटतम अर्हत हैं। हमारे भीतर चारित्र की उच्चता बनी रहनी चाहिए। आज मुझे ऊंचे पट्ट पर बैठाया गया है—पर उसका अर्थ यही है कि हम चारित्र की ऊंचाई को साधें।'

आचार्यश्री ने कहा, 'तीर्थंकर की देशना से जीवों का कल्याण संभव है। नाम तो केवल नाम है, किंतु भावरूप में जो है, वही भगवान हैं। हमारी परंपरा में भाव-निक्षेप ही वास्तविक साधुता है। जब तक जीवन है, साधुपना बना रहता है, पर मृत्यु के बाद आत्मा में वह नहीं रहता। केवल नाम-निक्षेप वाले वेषधारी नरकगामी हो सकते हैं। हमें चाहिए कि हम अहिंसा के पथ पर आगे बढ़ें—यही हमारा लक्ष्य हो, और वही हमारे लिए कल्याणकारी हो।'

साध्वी संचितयशाजी की स्मृति सभा आयोजित मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में साध्वी संचितयशाजी की स्मृतिसभा का आयोजन किया गया। पूज्यवर ने उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि वे डबल एम.ए. और पीएच.डी. धारक थीं। वे चित्रकला एवं रंगाई में भी निपुण थीं। हम उनकी आत्मा के प्रति मंगलकामना करते हैं कि वे सीमंधर स्वामी के दर्शन करें और अपने अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करें। आचार्यश्री के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने चार लोगस्स का ध्यान किया।

मुख्य मुनि प्रवर ने कहा, 'हमारा धर्म संघ संसार रूपी समुद्र है, जिसमें अनेक रत्न हुए हैं। साध्वी संचितयशा जी एक डॉक्टर साध्वी थीं। उन्होंने अनेक साध्वियों की निष्काम भाव से सेवा की थी। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कहा, 'यदि व्यक्ति अपना जीवन समाधिपूर्वक जीता है, तो जीवन सफल हो जाता है। साध्वी संचितयशा जी एक साधना शील साध्वी थीं। उन्होंने समाधिमरण प्राप्त किया है। मैं स्वयं भी उनके साथ रही हूं। वे सेवा भावनाओं से युक्त थीं। हम प्रार्थना करते हैं कि वे शीघ्र मोक्ष श्री को वरण करें।'

इस अवसर पर रेखा बोरदिया (डीसा) ने पूज्यवर से 43 उपवास की तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
12 मई - 18 मई, 2025

लोभ को संतोष से परास्त करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

मालवापरा।
3 मई, 2025

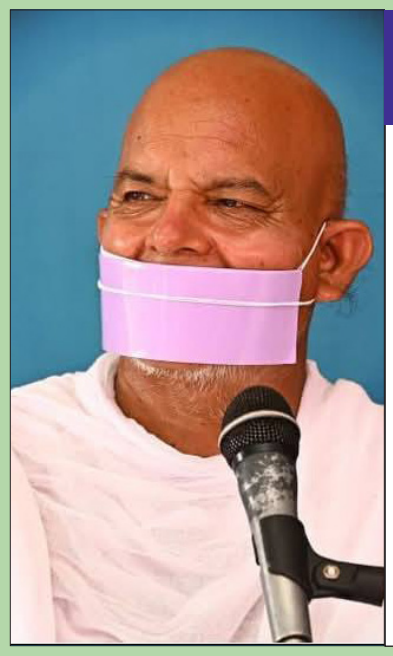

बाईसवां बोल : श्रावक के बारह व्रत

1. अहिंसा अणुव्रत
2. सत्य अणुव्रत
3. अस्तेय अणुव्रत
4. ब्रह्मचर्य अणुव्रत
5. अपरिग्रह अणुव्रत
6. दिग् परिमाण व्रत
7. भोगोपभोग परिमाण व्रत
8. अनर्थदण्ड विरमण व्रत
9. सामायिक व्रत
10. देशावकाशिक व्रत
11. पौषधोपवास व्रत
12. यथासंविभाग व्रत

अक्षय तृतीया महोत्सव के निमित्त चार दिवसीय डीसा प्रवास सम्पन्न कर, अप्रमत की साधना के साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 12 किमी का विहार कर मालवापरा की प्राथमिक शाला में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि व्यक्ति के भीतर इच्छा जागृत होती है, लोभ का भाव जागता है।

शास्त्र में कहा गया है कि एक लोभी आदमी को यदि सोने-चांदी के असंख्य-असंख्य पर्वत भी मिल जाएं, तो भी उसे संतोष नहीं मिलता। ऐसा होने का कारण है कि इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती हैं। जैन श्रावकों के बारह व्रतों में पाँचवां व्रत है - इच्छा परिणाम व्रत। व्यक्ति को इच्छाओं को सीमित रखना चाहिए। तीन तरह के व्यक्ति हो सकते हैं - महेच्छ, अल्पेच्छ और अनेच्छ। आदमी को इच्छाओं का अल्पीकरण करने का प्रयास करना चाहिए। संतोष से लोभ पर नियंत्रण किया जा सकता है।

मूढ़ और मोहग्रस्त व्यक्ति लोभ परायण होता है, पर पंडित आदमी अलोभ परायण होता है। संतोष परम सुख होता है। अनेक प्रकार के धन बताए गए हैं, पर संतोष धन के सामने सब धन धूलि समान होते हैं। हमें लोभ को संतोष से परास्त करने का प्रयास करना चाहिए। पूज्यवर ने समझाया कि जिस तरह जिसने जूता पहन लिया, उसके लिए पूरी धरती चमड़े से मढ़ी हुई के समान है, वैसे ही संतोषी व्यक्ति ने संतोष धारण कर लिया, उसके लिए सब जगह सम्पदा ही सम्पदा है।

आप लोग गृहस्थ हैं, पर व्यापार-कमाई में ज्यादा लालच न करें। नुकसान भी अगर हो जाए, तो दुःखी-निराश न हों। असफलता के कारणों को खोजें। पुरुषार्थ करना अपने हाथ की बात है, सफलता या फल मिलना अपने हाथ की बात नहीं है। जीवन के विभिन्न पहलुओं में हमें संतोष रखना चाहिए। जीवन में संतोष एक धन है, वह हमें प्राप्त हो जाए, यही बड़ी बात है।

पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय परिवार से प्रिंसिपल अशोक भाई प्रजापति व दिलीप भाई शाह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अर्हम्

डॉ. साध्वी संचितयशा जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	18 नवंबर, 1965, वि. सं. 2022, कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी, सरदारशहर
माता :	श्रद्धा की प्रतिमूर्ति किरण देवी चंडालिया
पिता :	श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्वर्गीय डालचंद चंडालिया
दीक्षा :	गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के मुख कमल से 'योगक्षेम वर्ष' लाडनूं में कार्तिक कृष्णा अष्टमी वि.सं. 2046
यात्रा :	राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली
कंठस्थ :	चौबीसी, दशवेआलियं, भक्तामर, कल्याण मंदिर, शांत सुधारस भावना, आचार बोध, संस्कार, व्यवहार बोध, आलंबन सूत्र, कर्तव्यषड्त्रिंशिका, 25 बोल, जैन तत्व प्रवेश, (अनेक थोकड़े)
संथारा :	दिनांक 27 अप्रैल 2025 को साध्वी शकुंतला कुमारी जी द्वारा लगभग 1.40pm पर तिविहार प्रत्याख्यान एवं 1.47pm पर चौविहार प्रत्याख्यान।
स्वर्गवास :	27 अप्रैल 2025, दोपहर लगभग 3:35 बजे

आचार्यश्री महाश्रमणजी के जन्मोत्सव : झलकियां

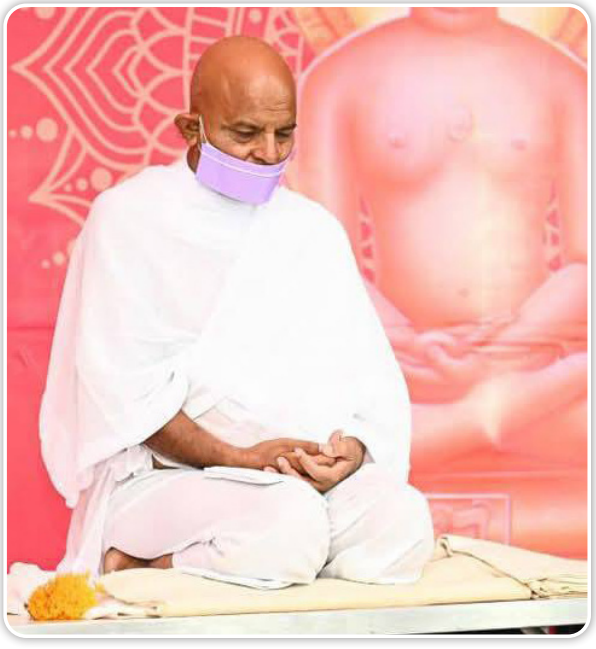

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।